

योगी गुरु जी के प्रश्नोत्तर — भाग 25

सत्संग से 200 प्रश्नोत्तर

आध्यात्मिक प्रत्यक्ष ज्ञान मार्ग

adhyatmikpratyakshgyan.com

प्रश्न: गुरु जी, मैं फंसी हुई हूँ क्योंकि मैं यह सोचती हूँ कि लोग क्या कहेंगे। इस समाज में लड़कियों की स्थिति आज भी खराब है, और मां-बाप भी अच्छे नहीं हैं।

क्या करूँ? (P25-0001)

देखो, ना कोई अच्छा है ना कोई बुरा है। कमी कहीं ना कहीं आप में है — आप कहीं ना कहीं सामर्थ्यवान नहीं हो। जब आपकी कमजोरी है तो आपको कोई स्वीकार नहीं करता। आप देखो, हमेशा मजबूत चीजों को ढूँढते हो, मजबूत को स्वीकार करते हो, कमजोर को अस्वीकार करते हो। कोई वस्तु भी लेने गए हो तो अपनी योग्यता के अनुसार मजबूत चीज खोजते हो, कमजोर को हटा देते हो। तो चाहे मां-बाप हैं, चाहे भाई-बहन हैं, समाज का कोई व्यक्ति है — अगर आपको स्वीकार नहीं कर रहा है तो इसका मतलब कहीं ना कहीं आप कमजोर हो। यह कहने से ज्यादा अच्छा है कि आप अपनी स्थिति को बदलो। यह मत कहो कि ये बुरे हैं, मेरे मां-बाप ठीक नहीं हैं। सब ठीक हैं, तुम ठीक नहीं हो — गड़बड़ी अपने अंदर है। पानी में पानी मिला दो, स्वीकार कर लेता है; पानी में तेल मिलाओ, स्वीकार नहीं करता, क्योंकि दोनों विपरीत हो गए। तो आपको यह देखना है कि मुझे स्वीकार क्यों नहीं किया जा रहा है — क्या मेरे कर्म ऐसे हैं? अगर अच्छे कर्म इतने हैं कि बुरे लोग स्वीकार नहीं कर पा रहे, तो उस जगह को छोड़ दो, अपनी अच्छाई जहां स्वीकार करें वहां फैलाओ। और अगर लोग अच्छे हैं और आप बुरा काम कर रहे हो, तो अपनी बुराई छोड़ के अच्छाई अपना लो। आप अपने आप को कब देखोगे? बस दुनिया को देखते हो — ये बुरा, ये अच्छा। अपनी स्थिति देखो कि आपके द्वारा क्या हो रहा है, आपके जीवन में कैसे बदलाव आएगा — उसके लिए काम करना पड़ेगा। अगर आप चाहते हो कि कोई स्वीकार करे, तो वह जैसा चाहता है वैसा आपको होना पड़ेगा। इस बात को गहराई से समझो, अपने आप को सामर्थ्यवान बनाओ और अपने जीवन में आगे बढ़ो।

प्रश्न: गुरु जी, मोक्ष मार्ग पर 99% साधक क्यों फेल होते हैं? (P25-0002)

कोई कहीं फेल नहीं हो रहा है, यही तो बात है। अगर कोई फेल हुआ तो फेल के लायक ही था — जहां वह गया था उस लायक वह नहीं था। फेल तो वो चलने के पहले था। काश इतनी क्षमता होती कि अपनी योग्यता को जांच पाता; परीक्षा में जांच हुई तो फेल हो गया। जैसे कोई विषय में फेल होता है तो उस विषय में ज्यादा मेहनत करता है और दूसरे साल निकाल लेता है — काश यह बात पहले ही पता कर लेता कि मैं किस विषय में कमजोर हूं। एक जगह होती है सीखने की, एक जगह होती है परीक्षा की। जब कोई शिक्षक या गुरु सिखा रहा है, उसी समय पूरी तरह तैयार रहिए, उसके एक-एक शब्द को पकड़िए — फिर आप फेल नहीं होंगे, क्योंकि परीक्षा में ज्यादा समय नहीं लगता, कुछ ही क्षण में फैसला हो जाता है। आप यह मत समझो कि वह ऐसे ही कर रहा है — कोई घटना के द्वारा, कोई पढ़ा के, कोई समझा कर आपको कुछ दिखाना चाह रहा है। सीखने गए हो तो बस सीखने की बात करते रहो। अपने ज्ञान को रख दो; अगर उस ज्ञान में मिलावट करोगे — वो सिखा रहा है और तुम उसे कुछ और बताओगे — तो सही तरीके से सीख नहीं पाओगे। जितना उसने सिखाया उतना मैंने सीखा, तब तो परीक्षा में पास हो जाओगे; और अपनी समझ से उसका विरोध कर रहे हो तो परीक्षा में फेल ही समझो।

प्रश्न: गुरु जी, सामर्थ्यवान आदमी यदि मोक्ष मार्ग पर चलना चाहता है, तो निर्विकार होने में कितने साल लग जाएंगे? (P25-0003)

12 साल के अंदर। जैसे कोई डिग्री लेने वाले विद्यार्थी से नया विद्यार्थी पूछे कि डिग्री में कितने साल लगते हैं, तो वह पूछेगा कौन सी डिग्री लेना चाहते हो। यहां आत्मज्ञान की डिग्री है — कंटिन्यू करोगे तो लगेंगे; बीच में एक साल पढ़ाई बंद कर दी या फेल हो गए, तो एक साल और बढ़ा लो। ऐसे ही अध्यात्म में भी है कि कम से कम 12 साल लगेंगे; अब आपने आगे कितनी यात्रा कर ली है, उसके ऊपर 12 साल के अंदर हो जाएगा। इतिहास को देखते हुए, सारी चीजों को देखते हुए मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा, और मेरा व्यक्तिगत अनुभव रहा कि 12 साल फाइनल है — 12 साल के अंदर ही आपको आत्मज्ञान हो जाएगा। ब्रह्म ज्ञान का मैं कुछ बोल नहीं सकता कि उसमें कितना समय लगेगा, किन स्थितियों में होगा। लेकिन आत्मज्ञान के लिए इतना कह सकता हूं कि अगर आप पूरी तरह लग गए — 100 में 101% — तो कंफर्म 12 साल के अंदर हो जाएगा, इससे ऊपर एक दिन भी नहीं लगेगा।

प्रश्न: बाबा, मैंने बहुत बेईमानी कर ली है और संसारी लक्ष्य के साथ मैं अभी फंसा हुआ हूं। क्या करूं? (P25-0004)

बेईमानी कर ली है, ठीक है — तो उसे आप छोड़ दो ना। अब ईमानदारी और सत्कर्म अपना लो, और वह आपको धीरे-धीरे निकालेगा।

प्रश्न: गुरु जी, क्या सेवा और साधना ही मार्ग है? 12 साल वही करना है? (P25-0005)

हां, निष्काम सेवा। आपके जीवन में हर वक्त निष्काम सेवा हो और हर वक्त आप साधना में जाने चाहिए, तब 12 साल के अंदर होगा। मतलब आपका सोना, उठना, जागना, बैठना — सब कुछ निष्काम सेवा में जाना चाहिए, पूरा समय। और आपकी साधना, आपका उठना-बैठना अपने आत्मिक कल्याण के लिए हो, आत्मज्ञान के लिए हो — तो 12 साल के अंदर हो जाएगा।

प्रश्न: गुरु जी, गृहस्थ को आत्मज्ञान कैसे होगा? (P25-0006)

गृहस्थ ईमानदारी, सत्कर्म, जरूरतमंद की सेवा करेगा; सत्संग सुनेगा; साल में कम से कम एक महीने एकांत में जाएगा — एक महीने तक सब कुछ छोड़कर 24 घंटे अपने आत्मिक चिंतन में लगा रहेगा। और उसके बाद जब उसकी जिम्मेदारी, उसका दायित्व पूरी तरह पूरा हो जाए, वह निकल जाए — तब उसे आत्मज्ञान होगा।

प्रश्न: गुरु जी, डर यह भी तो हो सकता है कि किसी को खोने का डर हो? (P25-0007)

किसी को खोने का डर क्यों है? क्योंकि उससे मुझे कुछ मिल रहा है। डर कहां है? जहां से कुछ मिलता है, वो खो ना जाए। अच्छा, उससे ज्यादा मिले तो खो जाए — क्या फर्क पड़ता है? नुकसान का अगर डबल मिल जाए ना, तो हम तैयार हैं। रोड में घर आ गया — 2 लाख का घर, 1 करोड़ मिलेगा — तो बड़े खुश हो जाते हैं कि अब माल अच्छा मिलेगा। हमें बस ज्यादा मिल जाए। अगर आप देखोगे ना, तो आपको किसी से मोह-बंधन नहीं है। मोह सिर्फ अपनी इच्छाओं से है, अपनी कामनाओं से है, अपनी अपेक्षाओं से है — किसी व्यक्ति से नहीं। बात बस ज्यादा की है। और यह तब तक रहेगा जब तक उस परम स्थिति को उपलब्ध नहीं होंगे, क्योंकि पूर्णता में नहीं आओगे तब तक जीवात्मा सोच रहा है कि मैं अपना अधूरापन पूरा कर लूं। और जिससे वो पूरा करना चाहता है, वो भी सोच रहा है कि मैं इससे पूरा कर लूं। आप उसे कुछ दे रहे हो ज्यादा लेने के चक्कर में, वो आपको कुछ दे रहा है ज्यादा लेने के चक्कर में — एक-दूसरे को एक तरीके से नोच रहे हैं। और जब नोच लेते हैं तो लगता है हम तो और ज्यादा खाली हो गए। इसी का नाम संसार है — जितना वह देगा, उससे ज्यादा लेने का प्रयास करेगा। इसी में होती है तकलीफ, इसी में होता है राग-द्वेष। लास्ट में ना ये शरीर, ना धन-प्रॉपर्टी, ना रिश्ते-नाते — सिर्फ तुम और तुम्हारा कर्म, और कर्म के हिसाब से आगे की यात्रा। अगर इच्छा-अपेक्षा है तो वैसे ही लोग आपको मिलेंगे; और अगर इच्छा-अपेक्षा से मुक्त हो गए, तो आगे की यात्रा होगी उस परम सत्ता की। दो में से एक होने वाला है। अब तुम कहां जी रहे हो, यह सिर्फ जीने वाले को पता है।

प्रश्न: गुरु जी, 'ॐ नमः शिवाय' का जाप बिना गुरु के कर सकते हैं या नहीं? बिना गुरु के यह मंत्र कहीं अपराध तो नहीं? (P25-0008)

जाप कर सकते हैं, लेकिन ईमानदारी के साथ। आप कोई भी मंत्र कर रहे हैं, तो मंत्र करने का भाव क्या है, क्यों करना चाहते हैं? एक बात और — क्या आप ईमानदार हैं? अगर ईमानदार हैं तो मंत्र जपें, अन्यथा छोड़ दें, नहीं तो उस मंत्र से आप बर्बाद हो जाएंगे। मंत्र का जाप तो रावण ने भी किया था, कंस ने भी किया था, विभीषण ने भी किया था, कुंभकरण ने भी किया था। लेकिन आप किस उद्देश्य से करते हो, किस भाव से करते हो — वह मायने रखता है। ईमानदार होकर मंत्र करते हो तब तो सहायक है; अगर बेईमान होकर मंत्र करते हो तो आपका पतन हो जाएगा। यह आपको देखना है।

प्रश्न: गुरु जी, यहां नियमों के साथ रहना पड़ता है — मोबाइल बंद, व्यवहारिक बातें नहीं — तो कभी-कभी घुटन सी होती है। क्या ये नियम हैं? (P25-0009)

मैं आप लोगों से पूछ रहा हूं कि क्या ये नियम है? आप यहां आए हो अपने आत्मिक कल्याण के लिए, आत्मिक चिंतन के लिए, साधना के लिए — तो मोबाइल स्विच ऑफ और व्यवहारिक बातें नहीं, ये नियम ही नहीं हैं। अब कोई क्लास में टीचर लेक्चर दे रहा है और बच्चे मोबाइल से बात करें, तो फिर लेक्चर देने का क्या मतलब? टीचर कहे फोन स्विच ऑफ कर दो, तो बच्चे बोलें ये तो नियम है — नियम कहां है? आप कुछ ले रहे हो, कुछ भर रहे हो। एक जगह से भरोगे तो पूरी तरह भर पाओगे; इधर से भर रहे हो और उधर से भरने लगे तो इधर का छूट जाएगा, फिर आने का क्या मतलब? जहां पे भी गए हो, जिस उद्देश्य से गए हो उसको तो पूरा करना पड़ेगा। मिलिट्री की भर्ती में जाकर कहो हम दौड़ नहीं पाते, तो भर्ती होगी? हर विभाग का एक सिस्टम बनाया गया है कि ऐसे-ऐसे करोगे तो इस पद पर आ सकते हो; कोई कहे ऐसे नहीं करूंगा, सीधा पद पर बैठा दो, तो उसे भगा दिया जाएगा, क्योंकि लाइन लगी है। जहां कुछ लेने जा रहे हो वहां का एक सिस्टम है, उस सिस्टम को पार करना ही पड़ेगा, तभी तो वह पाओगे। आप कहो ये सिस्टम बदलो, तो सिस्टम तुम्हारे लिए थोड़ी ना बदलेगा, क्योंकि सिस्टम ऐसे नहीं बन जाता — सिस्टम बनाने के लिए उस योग्यता, उस काबिलियत को हासिल करना पड़ता है। और समझ के अपनाओ तो उसमें आनंद मिलेगा।

प्रश्न: गुरु जी, क्या सत्कर्म और दान एक ही हैं? (P25-0010)

नहीं, अलग-अलग हैं। सत्कर्म मतलब जरूरतमंद। अब दान — आप किसे दान दे रहे हो, किस भाव में दे रहे हो? मान के चक्कर में, वहां दे रहे हो जहां जरूरत ही नहीं? आप देखो कहां दे रहे हो।

प्रश्न: गुरु जी, 'लोग क्या कहेंगे' — यह डर कैसे दूर करूं? (P25-0011)

यह डर है कि लोग क्या कहेंगे, इसका मतलब जिन लोगों के बीच में आप रह रहे हो, कहीं ना कहीं उनसे कमजोर हो और उनसे इज्जत-बेइज्जत की उम्मीद रखे हो। तो कम से कम अपनी कमजोरी को दूर करने के लिए काम करो — चाहे धन से कमजोर हो, तन से कमजोर हो, समझ से कमजोर हो। कमजोर व्यक्ति ही सोचता है कि समाज क्या कहेगा, और मजबूत व्यक्ति काम कर लेता है। ज्यादातर यह मिडिल क्लास वाले सोचते हैं — इज्जत, मान, प्रतिष्ठा। नीचे वाला झोपड़ी में मस्त है, उसके लिए जीना मायने है, उसे कल की चिंता नहीं; हाई क्लास वाले को किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना। मिडिल क्लास हमेशा इज्जत के चक्कर में इसलिए पड़ा रहता है कि वो हमेशा हाथ फैलाए रखता है कि मेरे समय में ये काम आएंगे — व्यवहार बिगड़ना नहीं चाहिए, क्योंकि आगे मांगना है। यह डर कब तक रहेगा? जब तक आप किसी से अपेक्षा रखे हो। तो मैं आपसे यही कहूंगा कि आप अपने आप को सामर्थ्यवान बनाएं — बात खत्म।

प्रश्न: गुरु जी, सामने वाला गलत व्यवहार करे और बाद में उसे स्वीकार भी ना करे, मुझे ही कहे कि आप ही गलत हो — तो मैं क्या करूं? (P25-0012)

उस व्यक्ति का त्याग कर दो — हमेशा के लिए।

प्रश्न: गुरुदेव, क्या उम्मीद छोड़ने से आत्मज्ञान होता है? (P25-0013)

हां, जब आप पूरी तरह से उम्मीद से मुक्त हो जाते हो। एक समय ऐसा आएगा कि आत्मज्ञान की भी उम्मीद खत्म हो जाएगी। खोजते-खोजते — जिसके लिए तुम निकले हो कि मुझे आत्मज्ञान हो जाए — तो आत्मज्ञान का भाव तुम्हें सारी उम्मीदों से मुक्त कराएगा। और एक समय ऐसा आएगा कि आत्मज्ञान का भी भाव हट जाएगा। उसके बाद अवधूत स्थिति होगी, और उसके बाद जाकर ज्ञान होता है।

प्रश्न: गुरु जी, आत्मा का मूल क्या है? (P25-0014)

आत्मा का मूल आत्मा है, आत्मा ही है। एक कण का मूल एक कण है, एक पत्ते का मूल एक पत्ता है। आत्मा कहीं से है — इसीलिए तो आत्मा किसी को खोज रहा है, कुछ पाना चाहता है। अब संसार से पाना चाह रहा है तो फंस गया। पहले वो आगे गया कि मैं इस संसार में पा जाऊंगा, पूर्ण हो जाऊंगा — वह नहीं हो पा रहा है। तो आत्मा समझ गया कि इस संसार में मैं पूर्ण नहीं हो पाऊंगा। तो फिर संसार को छोड़कर अपने आत्म तत्व में स्थिर होना चाहता है, अब वो पीछे जाना चाहता है — जहां से मेरा अस्तित्व है। जब हम उससे मिलेंगे तभी हम पूर्ण हो पाएंगे। पहले तो सीधा संत से नहीं मिला — पहले संसार से अपने आप को भरना चाहिए: विवाह-शादी, पढ़ाई-लिखाई, धन-दौलत, गाड़ी-बंगला। इससे भर नहीं पाया, तो ये बात समझ गया। जो लोग नहीं समझे हैं वो अभी संसार में ही लगे हैं, भरना चाह रहे हैं। जिसने वहां जी लिया और देखा कि यहां का आखिरी परिणाम मौत है, मौत के बाद फिर शरीर मिलेगा, फिर वही — जन्म-मरण, बीच में बच्चे, परिवार, दुख, कलह, परेशानी; और जिसके लिए करो वह भी छोड़ दो — तो जिसके समझ में यह बात आ गई, उसने कहा नहीं भाई, इससे तो मुझे निकलना है। यह कब समझ में आएगा, कोई फिक्स नहीं — जैसे व्यक्ति कोमा में गया तो एक दिन में भी बाहर आ सकता है, 20 साल भी लग सकते हैं। जब यह बात समझ में आ जाएगी तो आप वापस आने लगोगे। घुमा-फिराकर संसार में दुख के अलावा कुछ नहीं है — जिससे मिल रहे हो उससे बिछड़ोगे भी, चाहे वैभव हो चाहे कोई रिश्ता, और बिछड़ने में अपार कष्ट होता है। तो जीवात्मा समझ जाता है कि इनमें कष्ट है, तो ये बनाना बंद करो — अगर सुख नहीं लोगे तो दुख नहीं आएगा। नए रिश्ते बनाना बंद करो, और जितना बना है उससे धीरे-धीरे निकलो। इसीलिए मैं कहता हूं यहां व्यवहारिक बातें मत करना, नाम भी मत पूछो किसी से — जैसे ही पूछा, रिश्ता बन गया। मूल तक पहुंचने का एकदम सरल मार्ग है — नया बनाना बंद कर दो। संसार परिवर्तनशील है; ईमानदारी, सत्कर्म, सत्संग अपना लिए तो पुराने का नाश होता जाएगा, नया तुम पैदा नहीं कर रहे हो, तो एक समय ऐसा आएगा कि मूल में आ जाओगे। जिस घर की रिपेयरिंग नहीं होती, एक दिन वह खत्म हो जाता है।

प्रश्न: गुरु जी, क्या गुरु को सरल होना चाहिए? (P25-0015)

सरलता का मतलब आप लोग क्या समझते हो? सरलता का मतलब होता है — अगर कोई आपके लिए काम कर रहा है, आपके हित के लिए आपको डांट रहा है, डपट रहा है, फिर भी वह सरल है, अगर उसे आपसे कुछ नहीं चाहिए। उसकी कोई कामना, कोई इच्छा आपसे नहीं है; बस एक ही इच्छा है कि आपका सुधार हो जाए, आप उस परम तत्व को उपलब्ध हो जाओ, मूल तक पहुंच जाओ — वही व्यक्ति सरल है, वही सहज है, वही प्रेममय में जी रहा है। समाज के अनुसार तो मीठा-मीठा बोलने वाले को सरल बोलते हैं। नहीं — जो आपके लिए काम कर रहा है और उसे कुछ नहीं चाहिए, वही तो संत है। संत की परिभाषा यही है: जिसमें हित करने का भाव हो, जिसमें उस परम सत्ता से मिलाने का भाव हो, जिसके पास मार्ग हो, और जो इसके लिए आपको डांट रहा है, डपट रहा है कि कैसे आप अपने मूल तत्व तक, उस परम आनंद तक पहुंच जाओ।

प्रश्न: गुरु जी, क्या भेष से स्थितियां प्राप्त होती हैं? (P25-0016)

भेष तो एक सामाजिक व्यवस्था के लिए है — उस भेष से लोग जुड़े हैं तो आपको व्यवस्था दे देंगे। भेष से स्थिति थोड़ी ना आती है। गंगाजल को लोहे के बर्तन में रखो और गटर के पानी को सोने के बर्तन में, तो क्या होगा? गंगाजल गंगाजल रहेगा, गटर का पानी गटर का पानी रहेगा। कपड़ा कुछ भी पहना दो — कपड़ा तो सिर्फ तन को ढकने के लिए है। हम सामाजिक व्यक्ति हैं, समाज की एक मर्यादा है, लाज-शर्म है, इसलिए कपड़े की जरूरत है; अकेले हैं तो कपड़े की भी जरूरत नहीं।

प्रश्न: गुरु जी, आपका वेशभूषा नहीं है तो कहीं-कहीं आपका अनादर होता है — हम गुरु का अनादर होते हुए नहीं देख सकते, क्या करें? (P25-0017)

होने दो, क्या फर्क पड़ता है। वो अज्ञानी व्यक्ति है, अनादर कर रहा है तो करने दो — गुरु को फर्क नहीं पड़ता। शिष्य अभी उस अवस्था में नहीं पहुंचा, तो शिष्य उस अवस्था में पहुंच जाए। अगर काम करना है तो अनादर तो मुझे सहना पड़ेगा; आप लोग उस स्थिति में होके दिखाओ। जब मेरे काम का परिणाम आएगा तो अनादर करने वालों को भी शर्म आएगी। एक शिक्षक जिसको पढ़ा रहा है, समाज को वही जवाब दे सकता है, शिक्षक नहीं दे सकता; और अगर उसका पढ़ाया हर विद्यार्थी फेल ही हो रहा है तो उसे अपमान सहना ही पड़ेगा। रामकृष्ण परमहंस को कौन जानता था? स्वामी विवेकानंद के द्वारा ही वे पूरे विश्व में जाने गए — शिष्य के द्वारा। तो अगर मुझे मेरे गुरु से प्रेम है और समाज को जवाब देना है, तो मैं एक ही काम करके जवाब दूंगा — जिस लक्ष्य के लिए वो मार्ग बता रहा है, वहां पहुंचकर उस लक्ष्य से मैं बोलूं। किसी को वाणी से जवाब मत दो, कर्म से जवाब दो।

प्रश्न: गुरु जी, कोई अपमान क्यों करता है? (P25-0018)

अपमान इसलिए करता है कि उसे कुछ पाना है। अपमान करके उसे लग रहा है कि मैं कुछ हूं — उससे यह सिद्ध हो रहा है कि मैं कुछ हूं।

प्रश्न: योगी जी, जब जीवन में अथाह दुख हो तो संयम कैसे बनाए रखें? (P25-0019)

अथाह दुख है तो उस दुख के लिए आपने काम किया। अब दुख के लिए काम मत करो — और जो आया है वो सहना तो पड़ेगा।

प्रश्न: गुरु जी, मन की स्थिति हमेशा एक जैसी क्यों नहीं रहती? (P25-0020)

इसलिए कि आप जहां पे हो, बाहर हो — और पूरे संसार की स्थिति एक जैसी नहीं है। तो अगर आप "चाहिए" में जी रहे हो, तो आपका भाव-विचार बदलता ही रहेगा।

प्रश्न: गुरु जी, सेवा और सत्कर्म के बीच अभी भी क्लैरिटी नहीं समझ पा रहा हूं, कहीं द्वंद है। (P25-0021)

देखिए, सेवा एक होता है कि जिम्मेदारी है, दायित्व है, कर्तव्य है — हम अपने मां-बाप की सेवा कर रहे हैं, तो वह सेवा है। सत्कर्म मतलब जरूरतमंद की कर रहे हैं, वो चाहे कोई भी हो — अपने सामर्थ्य के अनुसार। तो यह सत्कर्म है।

प्रश्न: महाराज जी, यदि अपने ही माता-पिता या परिवार के लोग अज्ञान और अहंकार के वश केवल अपना नियंत्रण चलाना चाहें और हमारे सच्चे प्रेम व दर्द को ना समझें, तो क्या मन में बिना किसी द्वेष के उनसे दूरी बनाकर रहना सही है?

(P25-0022)

हां, बनाकर रह सकते हो। अगर कोई आपको नहीं समझ पा रहा है, ऐसा लगता है, तो उससे दूर हो जाना ठीक है।

प्रश्न: गुरु जी, भक्ति और ज्ञान में क्या अंतर है? (P25-0023)

भक्ति इसलिए की जाती है कि मुझे ज्ञान हो जाए।

प्रश्न: गुरु जी, क्या बिना गुरु के मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है? (P25-0024)

गुरु ज्ञान का प्रतीक है — ज्ञान बिना कैसे आगे बढ़ोगे? बस इतना पक्का कर लो कि मुझे निकलना है, और उस निकलने के लिए मैं जितना कर रहा हूं, क्या वह काफी है, क्या इतने में निकल पाऊंगा — यह आप ही जवाब दे दोगे। और जहां भी जरूरत पड़ रही है, गुरु का सहारा लो। फिर देखो कि गुरु का सहारा मैं ले रहा हूं तो मैं उस गुरु के लिए क्या कर रहा हूं — या बस लेते ही जा रहा हूं। आप लोग नाम लेते हो कि उनके शिष्य देखो उपलब्ध हो गए — उन्होंने पूरा जीवन अपने गुरु को दे दिया; गुरु की हां में हां थी, गुरु की ना में ना थी — ऐसी जिंदगी जी रहे थे।

प्रश्न: गुरु जी, आपके कहने का मतलब है कि हम कभी भगवान के पीछे गए ही नहीं? (P25-0025)

कहां गए? कहीं नहीं गए। यहां कोई किसी के पीछे आज तक गया ही नहीं — बस कामनाएं ले गईं। तुम एकदम स्थिर हो; तुम्हारा ना कहीं आना हुआ, ना कहीं जाना। इसीलिए तो कहा गया — ना जन्म, ना मृत्यु। इसे आप समझोगे ना, तो बस हंसी के अलावा कुछ नहीं आएगा कि जिंदगी भर मैं दौड़ा और मैं कहीं गया ही नहीं। अगर आप इसे समझ पाओगे तो आपको हंसी आएगी कि मैं जीवन भर दौड़ रहा हूं — कभी काम पे, कभी इधर, कभी उधर, कभी मारा-पीटी, सब मैंने किया — लेकिन आप देख पाओ तो मैंने कभी कुछ किया ही नहीं। अपने लिए थोड़ी कुछ भी करा? वो तो कामनाओं में जाके हो गया। हर व्यक्ति यहां कामनाओं में घूम रहा है। कोई कहीं ना जा रहा है — किसी का ना जाना हो रहा है, ना आना हो रहा है, ना जन्म, ना मृत्यु। जरा इस बात पे ध्यान देना।

प्रश्न: गुरु जी, क्या सत्य मार्ग पर चलने से पाप नष्ट होते हैं या फिर भुगतना पड़ता है? (P25-0026)

ईमानदारी से चल सकते हैं। सत्य तो कोई मार्ग नहीं है — सत्य तक पहुंचा जा सकता है। ईमानदारी के द्वारा सत्कर्म करने से विकारों का नाश होता है।

प्रश्न: प्रभु, मैंने आपसे जो भी प्रश्न किए, उनमें मुझसे जो भी गलती हुई हो, आप और सुनने वाले सभी साधक मुझे माफ करने की कृपा करें। (P25-0027)

ऐसी कोई बात ही नहीं। जैसे मां का दूध पीते हुए बच्चे कई बार मां के ही स्तन को काट लेते हैं — गाय का भी देखा होगा, भैंस का भी — लेकिन उनका काटने का भाव नहीं रहता। मां फिर मारती भी है, लेकिन फिर दूध भी पिलाती है। कहने का मतलब, आप लोग जिस जगह बैठे हैं वहां त्रुटि होगी ही होगी, वो कोई नई बात नहीं है, क्योंकि आपके ऊपर अहम है, वो काम कर रहा है। उस स्थिति में आप प्रश्न पूछेंगे ही पूछेंगे; अब उसका जवाब मुझे कैसे देना है, आपके अहम को गिराना है — वह मेरा काम है। आप गलतियां करेंगे ही करेंगे, आप नहीं चाहोगे तो भी होंगी, क्योंकि आप उस जगह खड़े हो। बस आप अपने आप को बदलो। उसमें माफी की कोई जरूरत नहीं है। माफी तो उससे मांगी जाती है जो मुझसे अलग हो। जो तुमसे अलग है ही नहीं, उससे क्या माफी मांगोगे? कौन किसको माफ करेगा? किसी भी आत्मज्ञानी के लिए सब एक जैसे हैं — उसको आप कुछ भी बोल दो, कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि वो जानता है आप उस जगह खड़े हो, इसमें आपका दोष भी नहीं है। उसे पता है आप कामनाओं में घूम रहे हो, अहम आप पे राज कर रहा है, आपकी सत्ता आप पे है ही नहीं; कामनाओं की वजह से अहम हावी हो गया है। इसलिए वह किसी में दोष नहीं देख पाता। इसलिए लोग मुझे गाली देते हैं तो मैं हंसता हूं कि उनकी भी गलती नहीं — वो क्या करें, राक्षस प्रवृत्ति ही उन पर इतनी हावी हो गई है। चलो, कम से कम सुन तो रहे हैं; कभी ना कभी अपनी स्थिति में आएंगे। वो तो मुझे जानते भी नहीं, कभी मिले ही नहीं, मेरा नाम भी पता नहीं — वो मुझे गाली क्यों देंगे? अपना गुस्सा उतार रहे हैं, कहीं मौका मिला तो उतार दिया। मैं तो कहता हूं आप अच्छी जगह दे रहे हो — कम से कम बंधन नहीं बन रहा, कोई प्रतिक्रिया इधर से वापस नहीं जा रही। कहीं और देते और उसका जवाब आता तो बंधन बंधने लगता।

प्रश्न: गुरु जी, क्या एक महापुरुष को गाली देना सही जगह है? मुझे तो लगता है कि उससे उसका और पतन होगा। (P25-0028)

उसके पास वही है तो वो क्या करे, उस बेचारे का क्या दोष है? उसका पालन-पोषण ही ऐसी जगह हुआ है, उसमें प्रवृत्ति ही ऐसी जागृत हो गई है — उसका भी दोष नहीं है। अगर उसने महापुरुष को, आत्मज्ञानी को गाली दी और उसके अंदर से कोई प्रतिक्रिया उसके लिए निकली, तो वह उसका आत्म-कल्याण ही करेगी, और कुछ भी नहीं — उसका हित ही होगा। भूल से ही सही, वो सही जगह पहुंचा; गलती से ही सही, सही आदमी को उसने डांटा, सही आदमी को गाली दी। क्योंकि आप जब कुछ दोगे तो आपको भी तो उसके बदले कुछ मिलेगा। उसके पतन में भी उसका कल्याण होगा। मैं भी यही कहता हूँ — तुम कैसे भी मिलो, मिलते रहो बस। चाहे आप गाली से मिलो, मैं आपसे ज्ञान से मिलूंगा। गाली तो आपने धारण की है, ज्ञान तो ऊपर से आ रहा है — यह कभी खत्म नहीं होगा; गाली तो आपकी एक ना एक दिन खत्म हो जाएगी। बस मिलते रहना, भागना मत। एक बार गाली दी तो देते रहना, तब तक देना जब तक खत्म ना हो जाए।

प्रश्न: गुरु जी, आप ऐसी स्थिति में आने के लिए कह रहे हैं जहां आपको कुछ भी नहीं चाहिए, लेकिन परिवार और लोगों के प्रति जिम्मेदारियों के कारण इंसान जिंदगी में उलझ जाता है — तो क्या करें? (P25-0029)

आपको कुछ नहीं चाहिए, तो उनके लिए जीना चालू कर दो — बस, खत्म बात है। ईमानदारी से।

प्रश्न: गुरु जी, प्रेम और मोह में क्या अंतर है? (P25-0030)

एक में मतलब है और एक में बेमतलब है। मोह में मतलब है और प्रेम में बेमतलब है — बस यही अंतर है। मतलब में मोह है, बेमतलब में प्रेम। आजकल लोग कहते हैं मतलब में प्रेम है — मतलब में प्रेम हो ही नहीं सकता, मतलब में तो सिर्फ वासना होती है। प्रेम का मतलब — जब आपको कुछ नहीं चाहिए, उस समय आप प्रेम में होते हो, और किसी से भी मिलते हो तो उस समय उसके प्रति प्रेम रहता है, क्योंकि आपको कुछ भी नहीं चाहिए; आप उसके लिए मिल रहे हो — यही प्रेम की परिभाषा है। और यह ध्यान रखना, सामने वाला उसे महसूस भी करेगा। जब आप प्रेम में रहोगे तो यह मत समझना कि आप ही महसूस करोगे — आपके पास जो भी लोग रहेंगे, वे उसे महसूस कर पाएंगे। जैसे आप गुस्से में होते हो तो आपको बताना थोड़ी ना पड़ता है, आसपास के लोग महसूस कर लेते हैं कि आप गुस्से में हो; वैसे ही जब आप प्रेम में होते हो तो आसपास के सब लोग महसूस कर पाते हैं कि आप प्रेम में हो। और प्रेम में तभी होंगे जब आपको कुछ नहीं चाहिए।

प्रश्न: गुरु जी, क्या ईमानदारी और सत्कर्म से हम मोक्ष, परमात्मा तक अवश्य पहुंच जाएंगे, या साधना में चलते-चलते धीरे-धीरे पता चलेगा? कृपया विस्तार से समझाएं। (P25-0031)

ईमानदारी अपना के सत्कर्म करके इतना पक्का हो ही जाएगा आपको कि आत्मदर्शन पक्का होगा, और उसके बाद परमात्मा की यात्रा होगी। यह पक्का परमात्मा तक पहुंचाएगा — जरा सा भी संशय नहीं। आज तक जितने भी महापुरुषों ने बोला है, इसी के लिए बोला है; पृथ्वी पर अभी तक जितनी भी किताबें लिखी गई, इतने के लिए लिखी गई — ईमानदारी अपना के सत्कर्म करो। जितनी भी साधनाएं बताई गई, सब आपको यहीं लाने के लिए हैं — या तो आप सीधा आ जाओ, या घूम-घूम के आओ, आना यहीं है। आप पक्का समझ लीजिए, इसके बिना आत्म-कल्याण हो ही नहीं सकता — ईमानदारी और सत्कर्म आपको अपनाना ही पड़ेगा; शुरुआत भी यहीं से, आखिरी भी यहीं से। या तो अभी समय है, कर लो; नहीं तो कई सालों के बाद या कई जन्म के बाद आओगे, आना आपको यहीं पड़ेगा। आपके पास समय है तो भटक लो, फिर आराम से आना; अगर समय नहीं है तो सीधा-सीधा आ जाओ। चाहे साधना करके आ जाओ, चाहे आराधना करके, चाहे भक्ति करके, चाहे नाम जप से, चाहे कुछ भी करो — आपको आना यहीं, ईमानदारी और सत्कर्म में ही पड़ेगा, और कोई रास्ता भी नहीं है। ये पहला और आखिरी रास्ता है। इसलिए समझ लो, समय बर्बाद मत करो — सीधे तरीके से आ जाओ।

प्रश्न: गुरु जी, अभी कुछ अनुभव तो है नहीं और आपने बोला कि ईमानदारी और सत्कर्म के रास्ते से चलो — तो उसमें प्रभु या परमात्मा को बीच में लाने की जरूरत है क्या? (P25-0032)

नहीं, कोई जरूरत नहीं है। वो आना होगा तो आ जाएगा, हमें लाने की जरूरत नहीं है। लेकिन दुनिया में अगर खोजोगे कि इस समाज में, पूरे ब्रह्मांड में सबसे सही काम क्या है — तो ईमानदारी और सत्कर्म। क्यों ना हम इसी को अपना लें? सबसे श्रेष्ठ यही है, सब इसके नीचे हैं। यही मुझे परम सत्ता तक ले जा सकता है। बताओ, इस जगत में ईमानदारी से जीवन जीते हुए सत्कर्म करने से श्रेष्ठ कोई काम है? सब इसके नीचे हैं, तो क्यों ना फाइनली इसी को पकड़ लिया जाए। उसे बीच में लाने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वो बीच में आता ही नहीं — वो तो फाइनली में मिलता है; बीच में लाओगे तो भी नहीं आएगा। तो आप ये करते रहो — आत्मदर्शन के लिए, अपने स्वयं के लिए, किसी और के लिए नहीं, निर्विकार होने के लिए। जब तक जीवन है, कुछ ना कुछ तो करना ही पड़ेगा, तो सत्कर्म में लग जाओ और ईमानदारी से जीवन जियो। आपसे आपका मिलना हो जाएगा, और आपसे आपका मिलना हो गया तो फिर उससे मिलना आप करा लोगे, क्योंकि आपके अंदर ही तो उसका पता है। एकदम सीधा-सीधा है।

प्रश्न: गुरु जी, मुझे कुछ नहीं चाहिए — पर क्या मुक्ति की कामना करना भी गलत है? क्या मुक्ति की चाहना भी कामना में आती है? (P25-0033)

मुक्ति के लिए काम करो, कामना क्यों कर रही हो? काम करो ना मुक्ति के लिए — ईमानदारी से जीवन जियो, सत्कर्म करो, मोक्ष तक ले जाएगा। बस सीधी-सीधी बात है; करो, प्रार्थना करने की क्या जरूरत है। और मुक्ति की चाहना कामना में नहीं आती — अगर आपने कुछ पकड़ा है, उसे छोड़ना कामना में नहीं आता। आप मूल में आ रहे हो ना; पकड़ना कामना था, छोड़ना नहीं।

प्रश्न: गुरु जी, पृथ्वी पर मनुष्य ही एकमात्र जीव है जो आत्मा-परमात्मा के चक्कर में फंसा हुआ है। यदि एक व्यक्ति पूरी जिंदगी सही कर्म करते हुए बिता दे, तो क्या उसे किसी परमात्मा को जानने की जरूरत है? (P25-0034)

नहीं — उसे परमात्मा जान लेगा। कहेगा, कोई तो ऐसा पैदा हुआ इस पृथ्वी पर जो पूरी जिंदगी ईमानदारी से जिया।

प्रश्न: गुरु जी, क्या यह बात सही है कि "भूखे भजन ना होय गोपाला" — यानी पहले अपने आप को धन से मजबूत करें, उसके बाद ज्ञान के लिए निकलें, ताकि किसी से मांगना ना पड़े? (P25-0035)

एकदम। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष — एकदम मजबूत करो।

प्रश्न: गुरुदेव, आत्मज्ञान कैसे हो? (P25-0036)

बस अपने आप को राग, द्वेष, मोह, आसक्ति, इच्छा, अपेक्षा, "मेरा", कर्ता से मुक्त करा लो। उम्मीद से मुक्त करा लो, बड़ा-छोटा बनने से मुक्त करा लो, कामनाओं से मुक्त करा लो, "अपने तरीके से चाहिए" — उससे मुक्त करा लो। बात खत्म हो गई।

प्रश्न: गुरु जी, मुक्ति कैसे मिलेगी? (P25-0037)

ईमानदारी अपना के। ईमानदारी मुक्ति है, बेईमानी बंधन।

प्रश्न: गुरु जी, कहावत है समुंदर से परे समुंदर — क्या वर्तमान समय में आपसे भी आगे कोई गुरु होगा? (P25-0038)

एक बार चित्रकूट में मुझे एक व्यक्ति मिले और उन्होंने पूछा — क्या गुरु भी छोटा-बड़ा होता है? तो हमने कहा — कोई एक बच्चे की मां है, कोई कई बच्चों की; तो क्या कई बच्चों वाली मां बड़ी हो जाएगी और एक वाली छोटी? मां तो मां है। तो गुरु ना छोटा होता है ना बड़ा; आत्मज्ञानी ना छोटा होता है ना बड़ा। अपनी-अपनी स्थिति में आके लोग ज्ञान देते हैं। जैसे मान लीजिए आपको भारत घूमना है और आप 100 साल पीछे का नक्शा उठा लो, उससे घूमो — तो घूम पाओगे? ढूंढते रह जाओगे; कुछ चीजें मिलेंगी भी तो वहां तक जाने का रास्ता नहीं मिलेगा। इसलिए अभी का नक्शा चाहिए — इसलिए कहा गया है जीवंत गुरु चाहिए। हमेशा बदलाव हो रहा है; उस देश, काल, स्थिति, परिस्थिति में रहकर जैसी भाषा की जरूरत थी, वैसा बोला गया। आज किसी को लेटर भेजना हो तो एक सेकंड लगता है, पहले हफ्तों-महीनों लगते थे, तार देना पड़ता था। 100 साल पुराने आदमी से जानकारी लोगे तो लेटर कब जाएगा, और अभी वाले से लोगे तो कहेगा — क्लिक, बताओ कहां भेजना है। इसीलिए कहा गया वर्तमान में, जीवंत गुरु चाहिए — वो देश, काल, स्थिति, परिस्थिति में आपको ज्ञान देगा कि कैसे निकल जाओ, क्योंकि पूरा माहौल बदल गया है। आप 100 साल पीछे का नक्शा लेकर घूम रहे हो, और उस नक्शे वाले ने खुद कहा था कि जीवंत गुरु की शरण में जाना — लेकिन गलती यही हो रही है, पुराने शब्द ढो रहे हैं, जीवंत गुरु नहीं ढूंढते। जीवंत मतलब जो उसमें जी रहा हो, बस शब्दों का ज्ञान ना हो — तब वह आपको जीने का तरीका बताएगा, कैसे आपका आपसे मिलना हो जाए, क्योंकि वो उसमें जी रहा है। उसे खुद का ज्ञान हो, और उससे जो निकले उसे कहते हैं सत्संग। कथा तो किसी की जीवनी सुना दो; किसी के शब्दों को, श्लोक को उठा के देना प्रवचन है; सत्संग वह है जो अपने आत्म तक पहुंचा, आत्मज्ञान — उससे आत्मिक कल्याण होगा। ऐसे गुरु को खोजो। और कहा गया है, ऐसा मिलना बड़ा दुर्लभ है — मिल जाए तो सौभाग्य।

प्रश्न: गुरु जी, पूर्ण और अपूर्ण में क्या अंतर है? इससे कैसे बचा जा सकता है?

(P25-0039)

पूर्ण अपने आप को अपूर्ण से पूर्ण करना चाहता है — यही उसकी अपूर्णता है। बस उम्मीद छोड़ दो — पूर्ण ही हो, पहले से पूर्ण हो। पूर्ण अपूर्ण से अपने को पूर्ण करना चाहता है, यही उसकी अपूर्णता है; बस ये छूट जाए। यही तो नहीं छूट पा रहा है — उम्मीद। उम्मीद ये आखिरी शब्द है; बस, खत्म।

प्रश्न: महाराज, क्या आपकी भगवान की तरफ यात्रा शुरू हुई है या खत्म हो गई है?

(P25-0040)

भगवान का मतलब आप समझिए क्या है? कभी-कभी परमात्मा को भी लोग भगवान बोलते हैं। परमात्मा अलग है, भगवान अलग है। भगवान का मतलब होता है — भग मतलब योनि, वान मतलब चलाने वाला। जो चलायमान से मुक्त हो गया होगा, वह भगवान है। फिर वहां से परमात्मा की यात्रा शुरू होती है।

प्रश्न: गुरु जी, अहम क्या है? कितने प्रकार का होता है? इसे कैसे पहचाना जा सकता है और कैसे समाप्त किया जा सकता है? (P25-0041)

अहम बस इतना है कि जब मैं अपने आप को सिद्ध करता हूं कि मैं तुमसे बड़ा हूं — बस यही अहम है। सीधी-सीधी बात है। उसे कैसे समाप्त किया जा सकता है? "मैं कुछ हूं" — उसका त्याग कर दो। तुम कुछ नहीं हो — मान लो, समझ जाओ, और समझ के कुछ करो। बात खत्म।

प्रश्न: गुरु जी, शक्तिपात क्या होता है और किसको होता है? (P25-0042)

जिसे कुछ नहीं चाहिए और वह मेहनत कर-करके थक जाता है — और जब कोई योग्य गुरु देखता है कि यह थक गया, असहाय हो गया, निराश हो गया, लेकिन मेहनत इसने खूब किया — तो उसके ऊपर वो अपनी ऊर्जा कर सकता है।

प्रश्न: गुरु जी, कारण शरीर, सूक्ष्म शरीर और स्थूल शरीर क्या है? (P25-0043)

स्थूल शरीर दिख रहा है। कारण में जी रहे हैं — वह कारण शरीर है। और जो स्वप्न में जाते हैं अपनी कामनाओं को पूरा करने के लिए — वह सूक्ष्म शरीर है।

प्रश्न: गुरु जी, परमहंस किसे कहते हैं? (P25-0044)

जो अपनी परम स्थिति को उपलब्ध हो गया, अपने आप में हो गया, स्थिर हो गया। जो अज्ञान और ज्ञान के भेद को समझ गया कि अज्ञान क्या है और ज्ञान क्या है — वो परमहंस। जिसमें यह क्षमता आ गई कि अज्ञान से आपको निकाल के ज्ञान में करा दे, उसे परमहंस कहते हैं।

प्रश्न: प्रभु, पुनर्जन्म के बारे में विस्तार से समझाने की कृपा करें — क्या पुनर्जन्म होता है? (P25-0045)

है। इसमें संशय है ही नहीं, क्योंकि अनेक तरह के बालकों का जन्म होता है। बालक अबोध होते हैं — कोई राजा के यहां, कोई रंक के यहां, कोई गरीब, कोई अमीर, कोई काला, कोई गोरा, कोई लंगड़ा, कोई अपाहिज, कोई कुरूप, कोई सुंदर — तो कुछ तो बात है। नहीं तो सब एक जैसे पैदा होते, और जब कर्म करने लायक होते तब जिंदगी में उतार-चढ़ाव होता।

प्रश्न: गुरु जी, मैं अब जीना नहीं चाहता हूं। क्या प्राण त्याग दूं? (P25-0046)

जीना नहीं चाहते हो तो अपना जीवन समाज सेवा में लगा दो। कहीं ऐसी जगह लग जाओ जहां बस सेवा करो — समझ लो तुम मर गए। इस शरीर को सेवा में लगा दो। किसी की सेवा करो, जरूरतमंदों की। लग जाओ कहीं।

प्रश्न: गुरु जी, कर्म का सिद्धांत भी विस्तार से समझाने की कृपा करें। (P25-0047)

जो हम करते हैं वही हमें मिलता है — सीधी-सीधी बात। कर्म का सिद्धांत है कि आप चाहे अच्छा करो, चाहे बुरा करो, चाहे सत्कर्म करो — कई गुना मिलता है। आप ये मत सोचना कि जितना किया उतना मिलेगा। एक बीज बोए तो कितना मिलता है? कई गुना मिलता है ना। तो सेवा बीज की तरह है — बीज या तो खाओ या तो लगाओ। लेकिन सत्कर्म फल की तरह है — खा भी लो, लगाओ भी, और कई सालों तक वो देता है। फल का पेड़ देखो, कई सालों तक देता है; बीज एक बार देता है और फिर बाद में देना बंद हो जाता है, लेकिन फल कई वर्षों तक, पुश्तों तक देता है। बीज या तो खाओगे या लगाओगे, दोनों तो नहीं कर सकते ना; और फल खा भी लोगे और उसका बीज बो भी दोगे। इसलिए जीवन में सत्कर्म करो — सत्कर्म फल की तरह है।

प्रश्न: गुरु जी, मेरे घर वाले कह रहे हैं कि शादी कर लो, अब उम्र हो गई। माता-पिता की उम्र भी 60 के पार हो गई है, घर में खाना बनाने के लिए कोई नहीं है, और मैं इस संसार में सांसारिक जीवन जीना नहीं चाहता। मैं क्या करूं? (P25-0048)

तो माता-पिता को भोजन बना के आप खिलाओ — सीधी-सीधी बात। अब भोजन के लिए किसी स्त्री को लाओगे, उसकी जिंदगी बर्बाद करोगे? आप बना के खिलाओ ना। आपके माता-पिता हैं — आपका कर्तव्य है, दायित्व है।

प्रश्न: प्रभु जी, आपको ज्ञान अभी हुआ, पहले क्यों नहीं? यह आपकी मेहनत है या प्रभु ही सब कुछ करने वाले हैं और हम सिर्फ कठपुतली हैं, सब उसकी मर्जी से हो रहा है? (P25-0049)

नहीं, मेरी मेहनत। मैंने किया है — मैं बोल सकता हूँ, मेरी मेहनत का परिणाम है। उसके लिए मैंने मेहनत किया है। और यही कहता हूँ कि आप लोग भी करो। कोई प्रभु कृपा करने वाले नहीं हैं — आपकी कृपा भी होती है तो आपकी मेहनत से।

प्रश्न: गुरु जी, मन क्यों भटकता रहता है? (P25-0050)

क्योंकि मन नहीं, आप भटकते हो। आपको कुछ चाहिए, तो मन बताता रहता है, इंगित करता रहता है। भटक तो आप रहे हो।

प्रश्न: गुरु जी, जो किसी एक व्यक्ति के लिए सही है, वो दूसरे व्यक्ति के लिए गलत हो जाता है — तो सही क्या है? (P25-0051)

कुछ नहीं — ना सही है ना गलत; इसी से पार करना है। देश, काल, स्थिति, परिस्थिति में गलत कभी सही और सही कहीं कभी गलत होने लगता है। बेईमानी गलत है, ईमानदारी सही है — बस इसी को पकड़ लो, आ जाओगे अपनी तरफ। बाकी जितना भी है, कभी गलत सही, कभी सही गलत — बदलता रहता है; ये नहीं बदलता। बेईमानी गलत है, ईमानदारी सही है — ये नहीं बदलेगा। बाकी देश, काल, स्थिति, परिस्थिति में हर बात बदल जाती है, ये नहीं बदलेगी। इसलिए सही को पकड़ लो — ईमानदारी को। बस बात खत्म।

प्रश्न: गुरु जी, मैं खाना बनाकर माता-पिता को खिला रहा हूँ, उनकी सेवा भी कर रहा हूँ, पर वे कहते हैं कि वंश आगे बढ़ाना है, यह तुम्हारी जिम्मेदारी है, शादी करो। (P25-0052)

आप सेवा करो — वह आपकी जवाबदारी है। वंश का ठेका कोई थोड़ी लिया है। कितने लोगों के शादी करने के बाद भी बच्चे पैदा नहीं होते, तो वो क्या करें?

प्रश्न: गुरु जी, बच्चा जब पैदा होता है तो अबोध होता है, उसमें कोई वासना नहीं होती। फिर जो वासनाएं आती हैं, क्या वे प्रकृति की हैं — क्या प्रकृति ने हमें ऐसा बनाया कि वासनाएं हों और फिर हम उनसे मुक्त हों? (P25-0053)

नहीं नहीं, ऐसा नहीं है। हम वासनाएं धारण करते हैं। पहले तो जरूरत में जीते हैं; धीरे-धीरे जब हम समझने लायक होते हैं तो मान के चक्कर में आ जाते हैं — सम्मान के चक्कर में, बड़ा बनने के चक्कर में। उसमें हम बेईमानी करके वासनाएं धारण करने लगते हैं। हार्मोन तो शरीर में आता है — शरीर भोग से आया है, योग से तो आया नहीं; शरीर के अंदर तो सब है ही, वो अपने समय पे जागृत होता है। अब आपको कैसे उपयोग करना है, वो देखो। बेईमानी तो शरीर में थोड़ी ना है, बेईमानी तो आपने किया। आप संबंध बनाने को वासना ना समझो — संबंध को गलत तरीके से बनाना वासना है। ये शरीर की जरूरत है; ये अपनी जरूरत पूरा करता है — शब्द, दृश्य, गंध, रस, स्पर्श — पांच इंद्रियों द्वारा। इसकी सबसे मुख्य जरूरत है भोजन और सांस, वो तो आपको देना ही पड़ेगा, आप चाहो या ना चाहो। बाकी जरूरत है तो दो, नहीं तो मत दो। अगर इसको भी आपने ईमानदारी से दिया तो मुक्ति से मोक्ष तक; बेईमानी से दिया तो बंधन। आपको चाहिए योग, इसे चाहिए भोग — लड़ाई ये है। रास्ता यही है कि अपने तरीके का त्याग कर दो, धीरे-धीरे रस खत्म हो जाएगा, तुम ही बचोगे। जो है उसमें ईमानदारी से जियो।

प्रश्न: गुरु जी, बात समझ में तो आ गई, पर व्यवहार में एकदम नहीं आती। मान लो मैंने सोच लिया कि मुझे कुछ नहीं चाहिए, लेकिन शरीर को भूख लगेगी, भोग की और काम की भी इच्छा होगी — तो क्या करें? (P25-0054)

"मुझे कुछ नहीं चाहिए" — उस भाव को रखते हुए भोग करोगे तो धीरे-धीरे निकल लोगे ना। पहले तो "चाहिए" में भोग कर रहे थे, अपने तरीके से। अब मुझे नहीं चाहिए, तो मैं विवश होके भोग कर रहा हूं। अब मैं देख पा रहा हूं कि यह मेरा शरीर कर रहा है, मेरी वासनाएं करवा रही हैं, मैं तो कर नहीं रहा हूं। तो धीरे-धीरे आप हट जाओगे, क्योंकि आप ये देख पाओगे कि मैं तो ये कर ही नहीं रहा हूं, मुझसे करवाया जा रहा है — मेरी वासनाएं करवा रही हैं, कामनाएं करवा रही हैं; मुझे तो करना ही नहीं है। आपको तो कुछ करना ही नहीं है, हो रहा है वासना की वजह से — तो धीरे-धीरे निकल जाओगे, क्योंकि इतना ध्यान रहेगा कि मुझे तो चाहिए नहीं।

प्रश्न: गुरु जी, योग भ्रष्ट किसे कहते हैं? उदाहरण देकर बताइए। (P25-0055)

आप किसी की भावनाओं के साथ खेले, आप जो नहीं हो वो लोगों को बता के ठग रहे हो — ये भ्रष्ट हो गए। आप कुछ हो और सामने वाला आपको कुछ और मान रहा है — तो ये भ्रष्ट हो गए। पाखंड करना भ्रष्ट है। जो तुम हो नहीं वो बता रहे हो, सिद्ध कर रहे हो, और सामने वाला वो समझ के आपको हाथ जोड़ रहा है — यह अपने पथ से भ्रष्ट हो जाना है।

प्रश्न: गुरु जी, अभी मैं इस स्थिति में नहीं कि आश्रम बनाने में आर्थिक रूप से कुछ सहयोग दे पाऊं, लेकिन दो-चार दिन के लिए ही सही, शारीरिक श्रम देना चाहता हूं।

(P25-0056)

देखिए, मूल यह है कि आप आत्मिक कल्याण का काम करें और अपना आत्मिक कल्याण करें — वही सेवा है। बाकी धन सेवा, तन सेवा देने के लिए लोग हैं ही, इसकी कोई कमी नहीं है। कहने का मतलब है, आप लोग अपना आत्मिक कल्याण करें, बाकी सब हो जाएगा — यही सेवा है। कोई कितना भी दे दे, कोई मतलब नहीं है, क्योंकि जो बनेगा वह बिगड़ेगा भी, बस उपयोग होगा। बनेगा-बिगड़ेगा, यही चलता रहता है। तो कम से कम जो था, है और रहेगा — उसकी यात्रा करनी है। बाकी तो ये सब काम होते रहते हैं। हम तो इसी को सेवा समझते हैं — अगर आपने अपना आत्मिक कल्याण करने की यात्रा कर ली, यही सेवा है मेरे लिए।

प्रश्न: स्वामी जी, क्या मुक्ति ईमानदारी से ही होती है? तो क्या ईमानदारी से बंधन नहीं होगा? (P25-0057)

ईमानदारी में आप होते हो; ईमानदारी करनी नहीं पड़ती, वह आपके कर्म में होती है। बेईमानी आप करते हो; ईमानदारी स्वाभाविक है। अगर ईमानदारी करनी पड़ती तो वो भी बंधन होता। बेईमानी आपको करनी पड़ती है। तो जब आपको ईमानदारी करनी ही नहीं होती, तो बंधन कैसे? वह स्वाभाविक घटित हो रहा है।

प्रश्न: गुरु जी, मनुष्य जीवन में ऐसा क्या करें कि दोबारा धरती पर जन्म ना लेना पड़े, जीवन चक्र समाप्त हो जाए? (P25-0058)

उम्मीद का त्याग कर दो। कुछ नहीं चाहिए — बस बात खत्म हो गई। कुछ नहीं चाहिए, तो फिर क्यों आओगे?

प्रश्न: गुरु जी, आशीर्वाद दीजिए, मुझे बिजनेस करना है, सक्सेस मिले। (P25-0059)

बिजनेस के लायक हो। जो बिजनेस करने जा रही हो, जिस फील्ड में जा रहे हो, उसकी पूरी जानकारी आपको होनी चाहिए। किसी पे निर्भर होके बिजनेस मत करना। अपना बैकग्राउंड देखते हुए और अपनी जानकारी को देखते हुए आगे बढ़ना। बस सीधी-सीधी बात है।

प्रश्न: गुरु जी, अगर पिछले जन्मों से यह जीवन ऐसा है, तो सबसे पहले जो इंसान आया उसका तो कोई पिछला कर्म था ही नहीं — फिर उसको क्यों भोगना पड़ा या जन्म लेना पड़ा? (P25-0060)

मनुष्य खुद आया ना, और खुद फंसाया ना अपने आप को कामनाओं में। बताओ, हम अगले जन्म से परेशान हैं कि इसी जन्म की पीड़ा झेल रहे हैं? ध्यान में जाते हो तो राग-द्वेष कहां-कहां जाता है? इसी जन्म का सब है ना। तो अपने आप को किसने फंसाया? आप ही ना? पिछले जन्म की कोई बात याद है? नहीं ना? इसी जन्म के लिए रो रहे हो ना? आपका जीवन अशांत किस लिए है? इसी जन्म का ना। आज आप अगर परेशान हो, अशांत हो, तो जो समझ के किए उसी के लिए ना। आपने समझ के ही किया ना। क्यों किया? मत किए होते, आपका जीवन प्रसन्नता भरा होता।

प्रश्न: गुरु जी, जो कर्म हम करते हैं उसका उसी समय भी तो प्रभाव होता है? जैसे मैं झूठ बोल रहा हूं तो उस समय भी अंदर जो ग्लानि है, दुख है, उसे भोग ही रहा हूं।

(P25-0061)

उस टाइम कहां भोग रहे हो? भोगते तो बाद में हो। उस टाइम तो उपयोग कर रहे हो, जो झूठ बोल के पाए हो। झूठ किसके लिए बोले? वस्तुओं के लिए ना। ग्लानि उस समय होती तो करते ही नहीं। अंतरात्मा मना करती है — वह केवल इंडिकेशन है कि मत कर, गलत है। ग्लानि तो बाद में होती है, जब आपको दंड मिलता है। अफसोस, ग्लानि, पश्चाताप बाद में होता है — जब हम अपने आप को खुद पकड़ते हैं, क्योंकि हम जहां जाना चाहते हैं अब यही बाधक बन रहा है; या कोई और पकड़ लेता है। कुछ घटनाओं का रिजल्ट हमें तुरंत मिलता है, कुछ का बाद में मिलता है। कोई मजबूत को धक्का दे तो तुरंत रिजल्ट मिलेगा; कमजोर को धक्का दिया तो प्रकृति बाद में देगी।

प्रश्न: गुरु जी, एक तरफ आप कहते हैं कि कर्मों का बंधन है, जो किया उसे भोगना पड़ेगा; दूसरी तरफ कहते हैं कि उम्मीद से मुक्त हो जाओ तो अभी मुक्त हो सकते हो। तो वह बंधन कहां जाएगा? ये दोनों बातें विरोधी नहीं हैं? (P25-0062)

इसीलिए तो मैं कहता हूं कि मुक्ति तुरंत पाओगे, मोक्ष बाद में। आप मुक्त तुरंत हो सकते हो — आगे का बंधन बंधेगा नहीं, यह है मुक्ति। और सत्कर्म करके पिछले का नाश करो — यह मोक्ष। धीरे-धीरे अपनी स्थिति में आ जाओगे। मोक्ष तब होगा जब पूरी तरह अपना भोग खत्म हो जाएगा; मोक्ष के पहले ही आपको ज्ञान हो जाएगा — जैसे रामकृष्ण परमहंस ज्ञान के बाद कैसर का भोग भोगे। ईमानदारी मुक्ति है, और फिर आप सत्कर्म करो। जितना आपका कर्म का बंधन है, वह सत्कर्म के द्वारा निकलेगा, और एक समय ऐसा आएगा कि अपनी स्थिति को उपलब्ध हो जाओगे। यही रास्ता है।

प्रश्न: गुरु जी, यह सिर्फ बौद्धिक बात तो नहीं है? आप सभी को बोलते हो कि उम्मीदों से, वासनाओं से अपने आप को मुक्त करा लो। (P25-0063)

मूल मैं अपनी तरफ से यही बोलता हूं — ईमानदारी अपना के सत्कर्म करो। कोई व्यक्ति कह रहा है कि अभी मुझे आत्मज्ञान चाहिए, तो मैंने कहा ठीक है, उम्मीद से मुक्त करा लो, अभी आत्मज्ञान हो जाएगा। प्रश्न के ऊपर उत्तर है। लेकिन अगर मेरी तरफ से कुछ कहना है तो मैं आप लोगों को यही कहूंगा — ईमानदारी से जियो और सत्कर्म करो। बस सीधी-सीधी बात है। आपने जैसे प्रश्न रखा, वैसे हमने आपके सामने उत्तर रख दिया। आखिरी में तो आपको यहीं पे आना पड़ेगा — एक-एक उम्मीद को छोड़ाओ, आखिरी में उम्मीद ही फाइनल छूटेगी, तभी ज्ञान होगा।

प्रश्न: गुरु जी, मैं ईमानदारी से काम करके कमा रहा हूँ, बेईमानी नहीं कर रहा। पर वासना तो फिर भी रह सकती है — जैसे आज 500 कमाए, तो इच्छा है कि 1000 कमाऊँ। क्या यह वासना है? (P25-0064)

तो 1000 वाली मेहनत करो। यह वासना नहीं है, यह आपकी जरूरत है। वासना वो है कि आपकी योग्यता से ज्यादा चाहिए, जितना आपने काम किया उससे ज्यादा चाहिए। जितना काम किया उसका तो हक बनता है। आपको 500 ज्यादा कमाना है तो 500 का और काम करो, बस। देखना यह है कि 500 ज्यादा कमाने का भाव कहां से पैदा हुआ — जरूरत में हुआ कि मान के चक्कर में हुआ? बगल वाले को देख के आपको गाड़ी चाहिए और नहीं खरीद पा रहे हो, तब अशांति बनी रहेगी। मान के चक्कर में हुआ तब तो गिरना पक्का है — मिल गया तो भी अहम भाव खड़ा हो जाएगा, नहीं मिला तो भी शर्माओगे। और अगर जरूरत में पैदा हुआ है तो उसके लिए मेहनत करोगे, और शांति रहेगी, क्योंकि मेहनत से कमाए।

प्रश्न: गुरु जी, मन विचारों में चला जाता है। इससे निकलने का प्रयास कैसे करें? (P25-0065)

प्रयास ऐसे किया जाए कि अगर मुझे कोई विचार आता है तो विचार का कारण क्या है? मेरे कर्म। घुमा-फिरा के मेरे कर्म का ही विचार आएगा। तो देखना यह है कि मैंने ऐसा क्या किया है कि यह मुझे परेशान कर रहा है — किस स्थिति में उसको किया, मुझे क्यों करना पड़ा, उसका कारण क्या है। जब यह देख पाओगे, फिर अपने आप को छुड़ा पाओगे। जैसे कोई गांठ लगी है — खोलने के पहले आपको देखना पड़ेगा कि गांठ कैसे लगी है, कहां लगी है, तभी खोल पाओगे। वैसे ही यह बंधन है; यह तभी छूटेगा जब आप देख पाओगे। और अब जीवन में ऐसा कोई कर्म ना हो कि उसका परिणाम आपको परेशान करे — यह संकल्प ले लो। विचार तो आएंगे; विचारों को रोकने का कभी प्रयास ना करना। विचार स्वतंत्र हैं, आपके कब्जे में थोड़ी ना हैं। यह देखो कि कौन से विचार मुझे परेशान कर रहे हैं। और कम से कम घर पे एक-दो घंटा बस अपने आप में बैठो, मोबाइल स्विच ऑफ कर दो। धीरे-धीरे आप उधर से छूटोगे और अपने आप में स्थिर होने लगोगे।

प्रश्न: गुरु जी, मन के नेगेटिव विचारों से मुक्ति कैसे पाऊँ? (P25-0066)

नेगेटिव विचार तब आते हैं जब आपने नेगेटिव वाला काम किया है। तो वह काम बंद करो और सत्कर्म करो। जरूरतमंद की सेवा करो। उससे आपको सहायता मिलेगी, उससे नेगेटिव विचार से आप निकल पाएंगे।

प्रश्न: गुरुदेव, हमारा सोने-जागने का कोई नियम नहीं है। जब सोते हैं तो पूरी तरह सोते हैं, और जब कार्य, साधना या सत्कर्म में लगते हैं तो वहां भी पूरी तरह लगते हैं। क्या यह गलत है? (P25-0067)

गलत-सही नहीं है। आप देखें कि ज्यादा से ज्यादा समय अपने आत्मिक चिंतन और सत्कर्म में अपने आप को लगाओ। सोने-उठने का समय कुछ नहीं होता। जरूरत है तो जागो, जरूरत नहीं है तो सो जाओ।

प्रश्न: गुरुदेव, पति और बच्चों का मोह कैसे छोड़ें? (P25-0068)

बस उम्मीद छोड़ दो, उनसे मोह छूट जाएगा। मोह उम्मीद में ही है।

प्रश्न: गुरु जी, कहते हैं ज्ञान होने के बाद अज्ञानी की तरह जीना होता है। इसे समझा दीजिए। (P25-0069)

कहने का मतलब है कि ज्ञान होने के बाद वह ना कोई मान की इच्छा करता है, ना वाहवाही की इच्छा करता है। काम करता चला जाता है। बस।

प्रश्न: गुरुदेव, सांसारिक मोह कैसे छोड़ें? (P25-0070)

सांसारिक मोह छोड़ने के लिए सीधा उम्मीद छोड़ो — हर तरीके की। जहां-जहां से आपने उम्मीद लगा के रखी है, उसी के मोह में आप जकड़े हुए हो।

प्रश्न: गुरु जी, मन को पूरी तरह नियंत्रण कैसे करें? (P25-0071)

नियंत्रण करने के लिए सीधा आप अपने आप पर नियंत्रण करिए — आपको क्या चाहिए, वह देख लीजिए।

प्रश्न: गुरु जी, आत्मज्ञान क्यों जरूरी है? (P25-0072)

आत्मज्ञान इसलिए जरूरी है कि मैं जहां हूं वहां दुखी हूं, निराश हूं। मेरे पास सब कुछ होते हुए भी मैं निराश हूं, घुटन में हूं। बेचैनी है, घबराहट है — मेरा क्या होगा, मुझे समझ में नहीं आ रहा है। इन सब से मुक्त होने के लिए आत्मज्ञान जरूरी है।

प्रश्न: गुरु जी, भाग्य और प्रारब्ध में क्या अंतर है? (P25-0073)

आपके किए गए कर्मों का जब परिणाम आता है, तो उसे प्रारब्ध कहिए, चाहे भाग्य कहिए, चाहे किस्मत कहिए।

प्रश्न: गुरुदेव, क्या केवल नाम साधना करनी है? मार्गदर्शन करें। (P25-0074)

नाम साधना के साथ काम साधना करो। काम साधना सबसे जरूरी है।

प्रश्न: गुरु जी, दूसरों के विचारों में मेरी ऊर्जा लग जाती है, टाइम वेस्ट होता है। क्या करूं? (P25-0075)

ऊर्जा इसलिए लगती है क्योंकि आपका उस विचार से कोई मतलब है। अगर मतलब नहीं होगा तो उसमें ऊर्जा लगेगी ही नहीं। तो देख लो कि उन विचारों से हमारा क्या मतलब है — मैं उन विचारों को क्यों पकड़ता हूं, क्यों वे मुझे परेशान करते हैं? मैं छोड़ना चाहता हूं, इसका मतलब मैंने पकड़ा है, तभी तो छोड़ना चाहता हूं। अगर मैं सोच रहा हूं कि यह विचार मुझे ना आए, इसका मतलब वह विचार मैंने पकड़ा है, तभी तो आ रहा है। अब देखो आपने क्यों पकड़ा, किस स्थिति में पकड़ा, और क्या अब आपको उसकी जरूरत है? जब यह सब समझोगे ना, तो धीरे-धीरे वह छूट जाएगा।

प्रश्न: गुरु जी, कभी-कभी जो लोग साथ में होते हैं उनसे ईर्ष्या होती है। क्या करूं?

(P25-0076)

आपने उनसे वाहवाही की उम्मीद रखी थी कि मैं इनसे ज्यादा हूं; समाज में कहीं यह दिखाने का प्रयास किया होगा। वे आगे निकल गए तो आपको तकलीफ हो रही है। हम किसी को दिखाने के लिए क्यों जीते हैं? मैं स्वयं के लिए, अपने काम को ले के क्यों नहीं जीता? कोई ना आगे है ना कोई पीछे है। आप उसकी तरफ देख रहे हो, इसलिए पीछे हो। बस तुम्हें मुड़ने की जरूरत है। मुड़ने का मतलब है उसके जीवन में मत झांको कि वह क्या कर रहा है; तुम देखो तुम कहां हो। तुम्हारे करने से कुछ होगा, देखने से नहीं। सबकी अपनी-अपनी समझ, विवेक और क्षमता है। हाथी को बहुत भोजन चाहिए, चींटी का इतने में पेट भर जाएगा — पेट तो दोनों का भरा। चींटी हाथी का भोजन खाए तो उसी में दब के खत्म हो जाएगी, और हाथी चींटी वाला भोजन करे तो वह भी मर जाएगा। आपकी क्षमता अनुसार ही आपको समझ, धन का बल और तन का बल दिया गया है; आप उसमें जियो। अगर और ज्यादा चाहिए तो अपनी समझ और अपनी ताकत को विकसित करो — देखो आपको क्या चाहिए, कैसे मिलेगा, और उसके लिए क्या काम करना है। धन का बल बढ़ाना है तो धनवान के साथ काम करो, शरीर का बल बढ़ाना है तो पहलवान के साथ रहो, और समझ विकसित करनी है तो जिसकी समझ विकसित हो गई उसके साथ रहो। लेकिन तीनों में समय लगेगा। पहलवान ने दो-दो पीस मेवा बताया और तुम एक ही दिन में चार किलो खा लो, तो बीमार हो जाओगे — जिससे ताकतवर बन रहे थे वही कमजोर कर देगा। इसीलिए धीरे-धीरे अपनी क्षमता के अनुसार आगे बढ़ो।

प्रश्न: गुरुदेव, हमें धन का बल और शरीर का बल नहीं चाहिए। हम बस आपके साथ अपनी समझ का बल बढ़ाना चाहते हैं, क्योंकि यही सर्वश्रेष्ठ है। (P25-0077)

बढ़ाना चाहते हो तो फिर आ जाओ और रहो अपनों की कुटिया में। रहना पड़ेगा ना, समय देना पड़ेगा ना। जहां भी बल बढ़ाना है, उसके लिए तो समय देना पड़ेगा। एक दिन में थोड़ी ना हो जाएगा। समय दो, हो जाएगा।

प्रश्न: गुरु जी, शरीर तो साधन मात्र है — तो इसे कौन चलाता है? हम ध्यान में बैठने जाते हैं तो कौन बैठा हुआ है? (P25-0078)

इस समय तो तुम चला रही हो। मूल तो आत्मा है। दो मैं हैं — एक अहम मैं, एक परम सत्य। तुम हाथ को ऐसे कर रही हो तो हाथ ऐसे हो रहा है; तुम नहीं कर रही हो तो नहीं हो रहा है। बैठ आप रहे हो, लेकिन आपकी जरूरतें बैठा रही हैं — हम जहां भी हैं, अपनी जरूरत पूर्ति कर रहे हैं। खाने-पीने, उठने-बैठने, ईमानदारी हो चाहे बेईमानी, हर काम में शरीर ही साधन बन रहा है, लेकिन जिम्मेदार आप हो, शरीर नहीं। जब एक्सीडेंट होता है तो गाड़ी नहीं पकड़ी जाती, ड्राइवर पकड़ा जाता है। ड्राइवर कहे कि ब्रेक पहले से फेल था, तो बनवाया क्यों नहीं? ढलान पे गाड़ी अपने आप चल गई, तो हैंड ब्रेक क्यों नहीं लगाया? गाड़ी निर्दोष है; हम इसको कहां ले जा रहे हैं, उसके जिम्मेदार हम हैं। यह शरीर गाड़ी है और इसमें तुम बैठी हो। तो इस गाड़ी का उपयोग सही जगह करो, नहीं तो पकड़े जाओगे और सजा भोगोगे। और कोई भी प्रश्न उठे तो पूछा करो — प्रश्न ना छोटा होता है ना बड़ा; बिना उत्तर के प्रश्न खत्म नहीं होगा।

प्रश्न: गुरु जी, आत्मचिंतन करते हैं तो सब ठीक लगता है, लेकिन व्यवहार में राग-द्वेष हो जाता है। (P25-0079)

व्यवहार में राग-द्वेष तब होता है जब आप योग्यता से ज्यादा पाने की इच्छा रखते हो। तो योग्यता से ज्यादा पाने की इच्छा का त्याग करो।

प्रश्न: गुरु जी, डर को जड़-मूल से कैसे खत्म करें? (P25-0080)

इच्छा है तो डर है, डर है तो इच्छा है। इच्छा-अपेक्षा खत्म होगी तो ही डर खत्म होगा। और जब तक इच्छा-अपेक्षा है, तब तक डर कभी खत्म ही नहीं होगा।

प्रश्न: गुरु जी, मैं अपने मित्र को परमानेंट छोड़ना चाहता हूं, उसने मुझे धोखा दिया था। (P25-0081)

तो छोड़ दो, इसमें क्या करोगे? और अगर आप छोड़ नहीं पा रहे हो, तो इसका मतलब कोई ना कोई उम्मीद जकड़ी हुई है। तो उसे छोड़ दो, बात खत्म।

प्रश्न: गुरु जी, जैसे-जैसे मैं साधना बढ़ाना चाहती हूँ, चारों तरफ से संकट घेर लेते हैं। क्या प्रकृति मेरी परीक्षा ले रही है? (P25-0082)

अपने आप को सामर्थ्यवान करो और साधना करो।

प्रश्न: गुरु जी, आप अपना स्वास्थ्य कैसे ठीक रखते हैं? क्या आपको चिंता नहीं होती? (P25-0083)

मुझे ना स्वास्थ्य को ले के कभी चिंता हुई, ना कभी भय हुआ। मैंने कभी कल में नहीं जिया; मैं आज में जीता हूँ, और अभी से नहीं, बचपन से। मैंने कभी संचय किया ही नहीं। अपनों की कुटिया के अलावा मैंने कभी कुछ बनाना नहीं चाहा, कभी कुछ लेना नहीं चाहा, तो मुझे कभी फिक्र, चिंता, डर सताया ही नहीं, क्योंकि मुझे काम करना था। मुझे काम से बहुत प्रेम था; समाज के लिए मैं कुछ करना चाह रहा था। कल क्या हो जाएगा — हो जाएगा तो देख लेंगे, पहले से क्यों इंतजाम करें? मेरी मां कहती थीं कि कुछ संचित करो, शादी कर लो, बुढ़ापे में तुम्हें पानी कौन देगा। तो मैं मां को एक ही बात कहता था कि माई, मैं ऐसा कर्म करूंगा कि पानी देने वालों की लाइन लगी रहेगी, लोग देने के लिए तरसेंगे। जब मेरा कर्म ऐसा है तो मैं डरूँ क्यों?

प्रश्न: गुरु जी, जब से इस मार्ग पे बढ़े हैं, अकेलापन और बढ़ गया है। सबकी समझ अलग है, कोई मुझे गहराई से समझ नहीं पा रहा। लगता है वे साथ होकर भी मेरे साथ नहीं हैं। (P25-0084)

कोई बात नहीं, आप तो अपने साथ हो ना। छोड़ो।

प्रश्न: गुरु जी, पुरानी यादें परेशान कर रही हैं। पुरानी यादों से कैसे निकलें? (P25-0085)

पुरानी यादों से निकलने के लिए आप देखो कि वे परेशान क्यों कर रही हैं — क्या कारण है, क्या रीजन है, क्या वजह है। यह देखो।

प्रश्न: गुरुदेव, क्या प्रकृति में लिप्त होकर एक उत्तम जीवन जिया जा सकता है?

(P25-0086)

ईमानदारी-सत्कर्म है तो जिया जा सकता है। अच्छा जीवन जीने के लिए ईमानदारी, सत्कर्म अपना लो और सत्संग।

प्रश्न: गुरु जी, काम ऊर्जा को प्रेम में तब्दील कैसे करें? (P25-0087)

ईमानदारी-सत्कर्म अपना लो, जीवन प्रेममय हो जाएगा।

प्रश्न: गुरु जी, ऐसा क्या करूं कि जीवन सहज और सरल हो जाए, और शीघ्र से शीघ्र मेरा मुझसे मिलना हो जाए? (P25-0088)

बस 24 घंटे सत्कर्म में लग जाओ, ईमानदारी के साथ।

प्रश्न: गुरु जी, कब तक हम लूटे जाएंगे? (P25-0089)

जब तक फ्री में पाने की इच्छा है, तब तक लूटे जाओगे — दुनिया की कोई ताकत बचा नहीं सकती। और जब फ्री में पाने की इच्छा का त्याग कर दोगे, तो दुनिया की कोई ताकत तुम्हें लूट नहीं सकती। फ्री में पाने का मतलब है कि मैं कुछ पाने की इच्छा रखता हूं पर उसके बदले कुछ कर नहीं रहा हूं। जैसे यहां पे कोई भोजन-व्यवस्था ले रहा है तो उसके बदले साधना दे रहा है — तो फ्री में होकर भी फ्री में नहीं है। अगर आत्मिक चिंतन ना करो, तो फिर हम आपको भगा देंगे।

प्रश्न: गुरु जी, ईमानदारी और बेईमानी में अंतर कैसे पता करें? दोनों ही तो प्राकृतिक स्वभाव का हिस्सा हैं। ईमानदारी क्या है? (P25-0090)

बेईमानी छोड़ दो, ईमानदारी के बारे में पता चल जाएगा। बस बेईमानी मत करो।

प्रश्न: गुरु जी, आत्मिक चिंतन में क्या करना है, किन विचारों पर चिंतन करें?

(P25-0091)

विचार कुछ नहीं। चिंतन में बस एक ही बात रखो कि मैं उस परम स्थिति को उपलब्ध कैसे हो जाऊं। बस यह सब करवा देगा। और जब लगे कि अब जाग नहीं पा रहा हूं, तब सो लेना।

प्रश्न: गुरु जी, जरूरतमंद की सेवा की तो वे पूरी तरह हमारे पर निर्भर हो जाते हैं।

(P25-0092)

जरूरतमंद मतलब जरूरतमंद। फिर छोड़ दो, खत्म।

प्रश्न: गुरुदेव, आत्मिक चिंतन में आज समझ आया कि करनी थी सूक्ष्म की यात्रा प्रत्यक्ष होके, पर प्रत्यक्ष को ही लक्ष्य समझने की अज्ञानता ने मुझे यात्रा से रोक लिया। क्या यह सही है? (P25-0093)

प्रत्यक्ष का मतलब होता है प्रत्यक्ष में जीना। प्रत्यक्ष का मतलब होता है — जितना मैं कर रहा हूँ, जितना बोल रहा हूँ, मैं समझ रहा हूँ। अगर मैं कहीं के लिए यात्रा कर रहा हूँ, इसका मतलब मैं पूरी तरह समझ पा रहा हूँ।

प्रश्न: गुरु जी, सेवा और साधना से क्या धुलेगा? (P25-0094)

आपका किया गया पिछला बुरा कर्म। निर्विकार होंगे — विकारों से मुक्ति पाने में सहायता मिलती है। आत्मचिंतन का मतलब यह नहीं कि कुछ नहीं करना, सिर्फ बैठे रहना, जो विचार आ रहे हैं उनको देखते रहना — ऐसा नहीं है। आत्मिक चिंतन का मतलब है — आपने अपना भाव बनाया कि मुझे निर्विकार होना है; मुझे राग, द्वेष, मोह, आसक्ति, इच्छा, अपेक्षा, मेरा और कर्ता के भाव से मुक्त होना है। और आप उसके लिए बैठ गए हो कि मैं कैसे मुक्त हो जाऊँ। जब इस भाव को लेकर बैठोगे तो बाकी काम अपने आप होने लगेंगे।

प्रश्न: गुरु जी, मैं समझ से पैसे और बिजनेस से मुक्त हो गया हूं, अब उसमें मेरा कोई अटैचमेंट नहीं रहा। उससे जो भी पैसा आ रहा है, मुझे वह नहीं चाहिए। क्या फिर भी कोई भरपाई बाकी है? (P25-0095)

अभी बाहर से मुक्त हो गए, लेकिन जितना किया है उसकी भरपाई कौन करेगा? काम-धाम में जो भी किया है, उसकी भरपाई कौन करेगा? आपका अटैचमेंट अब नहीं रहा, क्योंकि आपने सब बसा दिया, सबको व्यवस्थित कर दिया। लेकिन उस व्यवस्था करने में कितनों की व्यवस्था टूटी, बिगड़ी, क्या-क्या हुआ — उसका भुगतान कौन करेगा? फल तो आपने ले लिया ना। अब नहीं चाहिए, लेकिन उससे परिवार को तो बसा दिया, मेंटेन कर दिया। अब नया नहीं तैयार कर रहे हो, लेकिन पुराना हिसाब तो क्लियर करना पड़ेगा। जो उस कर्म में आपने अपनाया है, उसकी भरपाई तो करनी पड़ेगी। वह प्रकृति लेगी। कोई अपराध करता है तो जज के सामने जाता है; जज उसके साथ वैसा ही बर्ताव नहीं करता जैसा उसने किया था — पता नहीं कितने साल की सजा देगा। वैसे ही प्रकृति हिसाब-किताब लेगी। कोई नहीं बता सकता कि आपके साथ क्या होगा, किस तरीके से वह लेगी। भीष्म पितामह जब बाणों की शैया पे सोए थे, उन्होंने कृष्ण से पूछा कि मैंने पूरा जीवन ब्रह्मचर्य का पालन किया, कोई बुरा काम नहीं किया, यह किस कर्म का परिणाम है? 20 जन्म तक देखा, वहां कुछ नहीं मिला। तब 21वें जन्म में ले गए — वे राजकुमार थे, सर्प ने रास्ता काटा तो उन्होंने तीर मारा; वह बेर के पेड़ की कांटेदार डालियों पे गिरा और कांटे चुभ-चुभ के तड़प-तड़प के मरा। प्रकृति ने 21वें जन्म में हिसाब किया — कितने महीने उन्हें शैया पे रहना पड़ा, जबकि सर्प तो एक ही दिन में खत्म हो गया होगा। जब आप ज्ञान की तरफ बढ़ते हो, तब प्रकृति कहती है — अब हिसाब करो। रामकृष्ण परमहंस को ज्ञान होने के बाद भी, जब मोक्ष होने वाला था, कैसर का भोग भोग के जाना पड़ा। प्रकृति कुछ छोड़ेगी नहीं। हिसाब-किताब बिना किए आप यहां से निकल नहीं सकते। जितने सालों तक धन कमाया, वह परिवार में, अपनों में लगाया। अब आगे नहीं कर रहे हो, लेकिन पिछला जैसे-जैसे किया है उसका भुगतान प्रकृति लेगी, तभी छोड़ेगी। उसके लिए पश्चाताप होगा, ग्लानि होगी। जैसे-जैसे इसमें आगे बढ़ना चाहोगे, सब कर्म आपको दिखेंगे — जो भूल गए थे, वो भी दिखने लगेंगे। आप कहते हो मेरा मन भटक रहा है — कहां जाता है? आपके कर्म ही तो दिखा रहा है।

प्रश्न: गुरु जी, समझ से मैं पैसे और बिजनेस से मुक्त हो गया — ना कोई अटैचमेंट है, ना कोई जरूरत। पर शारीरिक संबंधों में, काम वासना में या बच्चों के मोह में यह चीज सिर्फ समझ से पूरी नहीं हो रही। क्या करूं? (P25-0096)

देखिए, यह शरीर भोग से आया है, योग से तो आया नहीं। इसे चाहिए भोग। और भोग आपके पास है भी — विवाहित जीवन। तो बस इसे ईमानदारी से दो। "कुछ नहीं चाहिए" — यह भाव रखो, और अपने तरीके से जो "चाहिए" है उसका त्याग करो। बस धीरे-धीरे आप निकलने लगोगे। पहले अपने लिए कर रहे थे, अब उनके लिए करना चालू कर दो — अपने आप छूटने लगोगे। चाहे वह शारीरिक संबंध हो, चाहे बच्चों के लिए कुछ करना हो। यह वैवाहिक जीवन है। अब आप छूटना चाहते हो, जरूरी नहीं कि पत्नी भी इससे छूटना चाहे। तो आपका कर्तव्य यह है कि बिना बताए — पहले अपने लिए कर रहे थे, अब उनके लिए करो। उन लोगों के लिए जीना चालू करो, फिर धीरे-धीरे देखो, आप मानसिक रूप से छूटते जाओगे। भाव में ईश्वर का वास है — भाव प्रबल करते जाओ कि बस अब मुझे तो कुछ नहीं चाहिए, लेकिन चलो, मैं इनके लिए कर रहा हूं। पहले मैं अपने लिए इनके साथ जीता था, अब इनके लिए इनके साथ जिऊंगा। इस भाव से जीना चालू करो, धीरे-धीरे आपको समझ में आने लगेगा।

प्रश्न: गुरु जी, काम-धंधे में तो मैं ही जिम्मेवार हूं, पर परिवार में बच्चे, पत्नी, भाई-बंधु भी जीवन को प्रभावित करते हैं। बच्चा ठीक रास्ते पे नहीं चल रहा, मेहनत या पढ़ाई नहीं कर रहा, तो उसे समझाने के लिए गुस्सा भी आता है। तब क्या करें?

(P25-0097)

गुस्से में उनका हित छिपा हो, बस अपना स्वार्थ नहीं। बस अपने तरीके से जो "चाहिए" है उसका त्याग करो, और धीरे-धीरे हर चीज से छूटने लगे।

प्रश्न: गुरु जी, जब शारीरिक संबंधों में या मोह में सुख मिले, तो उस समय हमें क्या करना चाहिए? (P25-0098)

सुख मिले, मिलने दो। भोजन करते हो, स्वाद मिल रहा है, मिलने दो। महापुरुषों को भी भोजन दिया गया तो क्या उसमें स्वाद नहीं मिला उन्हें? लेकिन स्वाद की कामना नहीं की कि मुझे ऐसा ही भोजन चाहिए। मिले तो मिले, ना मिले तो ना मिले। मिला तो भी ठीक, नहीं मिला तो भी ठीक, क्योंकि मैं तो कर रहा हूं — परिणाम के लिए कुछ नहीं कर रहा हूं। परिणाम कुछ भी आए।

प्रश्न: गुरु जी, बौद्धिक तौर पे तो यह चीज समझ में आ जाती है, लेकिन जहां सुख होता है वहां आदमी चाहता है कि जो आज सुख मिला है, वह कल भी मिले।

(P25-0099)

बौद्धिक स्तर पे समझ में आई; जब यह जीने लगोगे तो प्रैक्टिकल भी होने लगेगा। जब आप जियोगे, तब समझ में भी आने लगेगी। उसमें जीना चालू करो कि अब मुझे इन लोगों के लिए जीना है — अभी तक मैं अपने सुख के लिए इनके साथ रहा, अब मैं इनके सुख के लिए इनके साथ रहूंगा। इस भाव से रहना चालू करो, देखो जीवन बदल जाएगा, मानसिक रूप से आप छूटते चले जाओगे। लेकिन भाव बनाना पड़ेगा, भाव प्रबल होना चाहिए। रास्ते का पता मिल गया कि यहां से ऐसे जाओ — लेकिन जब जाएंगे तभी यात्रा होगी ना। तो जैसे मैंने बताया, आप बस उस भाव से करो, धीरे-धीरे छूटने लगोगे।

प्रश्न: गुरु जी, आध्यात्मिक ऊंचाई व्यक्ति को बाहर जाने से मिलती है या घर पर रहने से? क्या घर पर रहकर भी आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है?

(P25-0100)

एकदम किया जा सकता है। उसमें जीना पड़ेगा। आध्यात्मिक ऊंचाई ना बाहर जाने से मिलती है, ना घर पर रहने से — जीवन जीने से मिलती है।

प्रश्न: गुरु जी, शिष्य को गुरु की खोज में निकलना चाहिए या गुरु को शिष्य की खोज करनी चाहिए? क्या गुरु की भी तमन्ना नहीं होती कि शिष्य को खोज करके उसका सफर आसान कराए? (P25-0101)

शिष्य को गुरु की खोज करनी चाहिए। जब शिष्य की खोज होती है तो गुरु मिल जाता है, आसान कराने के लिए। अगर खोज ही नहीं है तो गुरु मिल भी जाए तो करोगे क्या? तलाश एक तरफ से होगी तो दूसरा मिल जाएगा। जैसे इस संसार में प्रकृति में — नर हमेशा तैयार है, लेकिन मादा का समय होता है गर्भधारण का; मादा तैयार नहीं तो कितने भी नर ला दो, करेंगे क्या, चले जाएंगे। और तैयार है तो आप भगाओ भी तो नहीं भागेंगे। तो तैयारी आपको करनी पड़ेगी, जो चाहिए फिर आपको मिल जाएगा, प्रकृति भेज देगी। प्रकृति स्वयं गुरु है। आप शिष्य तो बनीए, वो खुद किसी न किसी गुरु को भेज के करवा देगी। शिष्य आपको बनना पड़ेगा, गुरु मिल जाएगा — जैसी आपकी योग्यता होगी, वैसा मिल जाएगा। और आप योग्य ही नहीं हो तो कितने भी गुरु आ जाएं, फिर करेंगे क्या? आप अगर तैयार हो गए तो गुरु दरवाजा तोड़ के आ जाएगा, बोलेगा — चल। जैसे रामकृष्ण परमहंस तैयार हो गए तो उनके पास तोतापुरी आ गए। तो तैयार आप हो जाइए, बस बात खत्म। शिष्य ही तैयार नहीं हो तो गुरु आके करेगा क्या? गुरु तो एकदम तैयार है।

प्रश्न: गुरु जी, मनुष्य अपने आप को उम्मीद से पूरी तरह कैसे छुड़ाए? उसके लिए क्या रास्ता है? (P25-0102)

बस अपने तरीके का त्याग कर दो, धीरे-धीरे आप छूट जाओगे। और सत्कर्म करो, ईमानदारी से जीवन जियो।

प्रश्न: गुरु जी, गलत काम करना तो दूर, सोचने से ही आत्मा तुरंत मना करती है और दुखी भी होती है, लेकिन हम लोभ-मोह के कारण आत्मा को इग्नोर कर देते हैं और गलत कर्म कर देते हैं। तो क्या उसका शारीरिक फल बाद में मिलता है? (P25-0103)

बाद में ही मिलेगा ना। पहले तो आपने सुख लिया।

प्रश्न: गुरु जी, गुरु और शिष्य की बातचीत में कोई बात हमें समझ में न भी आए, फिर भी क्या गुरु-शिष्य के बीच शब्दों के अलावा भी कुछ होता है, जिससे विचार बदलते हैं? (P25-0104)

आंतरिक ऊर्जा होती है। आप सिर्फ शब्द नहीं सुन रहे हो — शब्दों में ऊर्जा है। इसीलिए कहा जाता है ना, जीवंत गुरु ढूँढ। क्या ये शब्द उपनिषद, वेद, वेदांत, गीता में नहीं हैं? पर जीवंत गुरु के शब्दों में ऊर्जा होती है। जीवंत गुरु के सामने आपकी कामनाएं काम नहीं करतीं। वो सीधा आपसे बात करता है, सीधा आत्मा तक पहुंच जाता है, सीधा आत्मिक बात करता है। उसके सामने इंद्रियां वगैरह काम करना बंद कर देती हैं। इसलिए आपके तीन-तीन घंटे बीत जाते हैं, आपको पता नहीं चलता — कहीं एक घंटा नहीं बैठ सकते, यहां तीन-तीन, चार-चार घंटे बैठ जाते हो, क्योंकि आत्मिक सुकून मिल रहा है, आत्मिक शांति मिल रही है। मेरे पास बच्चे आते थे, रात 2-3 बजे तक बैठते थे; बोलते थे कि हम कभी इतना बैठ नहीं पाते, जाने की इच्छा एकदम नहीं है, पर सुबह काम पे जाना है। तो जीवंत गुरु जो आत्मज्ञानी होता है, वो सीधा आपसे बात करता है। वहां पे आपकी कामनाएं, राग-द्वेष कुछ काम नहीं करते, सब शिथिल हो जाता है। ऊर्जा भी रहती है, समझ में भी आता है सबको, एहसास भी होता है।

प्रश्न: गुरु जी, अगर शरीर को कोई नई आदत लगानी हो, जैसे ब्रह्म मुहूर्त में 4 बजे उठने की — बहुत कोशिश की, पर पुराने संस्कार आ जाते हैं, उठ नहीं पाते। मार्गदर्शन करें। (P25-0105)

बस 10 के पहले सोना चालू कर दो। सीधी-सीधी बात।

प्रश्न: गुरु जी, पढ़ाई करने के लिए सबसे अच्छा समय कौन सा है, जब मन पढ़ाई में सबसे ज्यादा फोकस हो? (P25-0106)

सुबह उठ के, प्रातः काल। तब पूरी एनर्जी, पूरी ऊर्जा रहती है शरीर में।

प्रश्न: गुरुदेव, बिजनेस करना सही है या गलत? (P25-0107)

ये तो आपके ऊपर है — आपकी जरूरत, आपका बैकग्राउंड। नौकरी या बिजनेस, दो में से एक करना ही पड़ता है, तो बिजनेस सबसे बढ़िया है। अब आपका बैकग्राउंड क्या है देख लो, आपकी कैपेसिटी, आपकी क्षमता क्या है देख लो — दोनों बात।

प्रश्न: गुरु जी, मैं बहुत दुखी हूँ। एक के बाद एक कष्ट आ रहे हैं, बहुत प्रॉब्लम चल रही है। कुछ रास्ता बताएं। (P25-0108)

इस प्रॉब्लम में किसी जरूरतमंद की सेवा करो। फिर समझ में आने लगेगा।

प्रश्न: गुरु जी, परमात्मा हमारी मदद क्यों नहीं करते? क्या वो हमें आत्मज्ञानी बना सकते हैं? (P25-0109)

हां, बना सकते हैं। आप कुछ और बन गए हो ना। जो बन गए हो, वो मिटा दो। बस बात खत्म।

प्रश्न: गुरु जी, दुनिया को माया कहते हैं, फिर हमें यह सही क्यों दिखती है? माया क्यों नहीं लगती? (P25-0110)

माया बेईमानी है। हमने बस शब्द बदल दिए हैं।

प्रश्न: महाराज जी, मैंने भगवद गीता में पढ़ा था कि जब इंसान को किसी दुविधा में कोई रास्ता न दिखे, तो सिर्फ श्री कृष्ण ही सही रास्ता दे सकते हैं, क्योंकि उनसे बड़ा गुरु कोई नहीं है। क्या यह सही है? (P25-0111)

ठीक है, पढ़ा है तो कोई बात नहीं है। सही-गलत से परे कुछ है। रास्ता कोई भी दिखाए — बात खत्म।

प्रश्न: गुरु जी, ये सृष्टि कभी खत्म भी हो जाएगी? सत्संगों में बताते हैं कि सृष्टि बहुत बार खत्म हुई है, बहुत बार सृजन हुआ है। (P25-0112)

आप बताओ, आपने मकान बनाया कभी? हम जो सृष्टि बना रहे हैं, वो खत्म हो जाएगी। जो हमने बनाई है वो खत्म हो जाएगी; उसकी सृष्टि का क्या होगा, वो तो वो बताएगा — उसने बनाई है, तो उससे मिलो। बताने को कुछ भी बता रहे हैं। मैं तो एक ही बात कह रहा हूँ कि आपका कल्याण कैसे होगा, वो देख लो। बस, रास्ता समझ में आ गया। सीधी-सीधी बात — सृष्टि खत्म हो तो भी ठीक, नहीं खत्म हो तो भी ठीक। अगर ये होता भी है, तो उससे मेरा क्या होगा — वो इंपॉर्टेंट है। ब्रह्मांड एक हो चाहे अनंत हों, हमसे क्या मतलब?

प्रश्न: गुरु जी, पता नहीं कौन सी योनि में जाएंगे — बस आखिर में मालिक पार कर दे, या गुरु की इतनी दया हो जाए? (P25-0113)

गुरु दया करेगा तो सब पे नहीं करेगा, तुम पे ही करेगा? मालिक दया करेगा तो तुम पे ही करेगा? सब पे कर देगा ना। तुम्हारी मेहनत से ही हो सकता है। कर्म तुम्हें करना है, तुम्हारे से ही होगा। ना कोई गुरु करने वाला है, ना कोई मालिक करने वाला है। जो करना है तुम्हें करना है, फिर मदद करने वाला कोई ना कोई आ जाएगा। शुरुआत तो करनी पड़ेगी। तुम पे कोई मालिक दया क्यों करेगा, फिर इन पे क्यों नहीं करेगा? मालिक तो एक ही है। सीधा-सीधा — मेहनत, ईमानदारी, आगे बढ़ जाओ।

प्रश्न: गुरु जी, खराब कर्म करेंगे तो ध्यान लगेगा ही नहीं ना? बेईमानी में ध्यान नहीं लगता? (P25-0114)

कैसे नहीं लगेगा? कुछ भी तुक्का मत मारो। यही मैं कहता हूँ — कुछ भी मत बोलो। मैं तो कह रहा हूँ, अपना जितना एकत्रित किया है, हटाओ; प्रत्यक्ष ज्ञान समझो। आप चाहो ईमानदारी करो, चाहे बेईमानी करो, ध्यान तो लग ही गया। बेईमानी में तो और ज्यादा ध्यान लगता है — एकदम और सचेत रहना पड़ता है। ईमानदारी से ज्यादा बेईमानी में ध्यान एकाग्र करना पड़ता है कि कहीं पकड़ा न जाऊँ। ध्यान करने के लिए आधार-बेस चाहिए, तो आप कहीं ना कहीं तो लिप्त हो। इसलिए ध्यान से भी मुक्ति चाहिए, तभी आप स्व में स्थिर हो पाएंगे।

प्रश्न: गुरु जी, इस पर थोड़ा बताइए — ये मन कैसे काम करता है? बाहर से जब मन को नहीं मिलता, तब क्या होता है? (P25-0115)

जैसे भूख लगी, तो भोजन कहां है — आपको अंदर पता है ना, होटल का पता, घर का पता, कहां-कहां भोजन है, वो सब बताएगा। कभी-कभी कहते हो मुझे याद नहीं आ रहा, लेकिन याद करने का प्रयास करते हो तो याद आ जाता है, क्योंकि वो फाइल खुल नहीं रही थी। जैसे मोबाइल-कंप्यूटर में कोई फाइल नहीं खुलती तो अंदर का पता नहीं चल पाता। आपके अंदर सब फाइलें हैं, अलग-अलग आपने बनाई हैं; जब फाइल खुल गई, बात याद आ गई। तो सब हमारे अंदर स्टोर है। जैसे आपको कोई दृश्य देखना हो, इच्छा जग गई, और बाहर नहीं दिख रहा है, तो जितना आपने दृश्य देखा है वो सब आने लगेगा — क्योंकि बहिर्मुखी उसे मिल नहीं रहा है। पहले बाहर ढूँढता है, नहीं है पॉसिबल तो अंतर्मुखी ढूँढते हो। मन निमित्त है। मोबाइल-कंप्यूटर में एरो को कौन ले जाता है? आप ले जाते हो। एरो का कोई जगह नहीं — कहां से आता है, कहां जाता है पता नहीं। एरो से सब खोल सकते हो, लेकिन एरो को नहीं खोल सकते। और एरो किसके लिए काम करता है? उसी मोबाइल-कंप्यूटर के लिए; उसमें जितना है वही खोलेगा, बगल वाले का नहीं खोल सकता। तो आपका मन आपके लिए काम करता है, शरीर के लिए।

प्रश्न: गुरु जी, जो चीजें मेरी इंद्रियों ने देखीं, चखीं, सुनीं, वो मेरे अंदर संग्रहित हो गई, और वो जरूरत में काम करती हैं। तो जो मन है, क्या वही हमारे विचारों को चलाता है? (P25-0116)

कौन चलाता है? आदेश आप। जरूरत आपकी है, जरूरत में चलता है, लेकिन सब चलाने वाले आप हो — जीवात्मा। जैसी आपने आदत डाली, शरीर इंद्रियों द्वारा जैसा आपने ग्रहण किया, वैसी इच्छा आपकी बनती चली गई, और उसे वो मन इंगित करता है, मन बताता है। एरो कभी नहीं कहता कि आप क्या खोलो; आप जैसा खोल दोगे, दिखाने लगेगा। उसका काम ये नहीं है कि अच्छा या बुरा। मन ना अच्छा ना बुरा, ये दोनों से परे है; उसे मतलब ही नहीं। मतलब आपको है कि क्या अच्छा है, क्या बुरा। उसका काम है आपको इंगित करना।

प्रश्न: गुरु जी, मैं समझती हूं कि मेरा शरीर है, इसलिए मुझे भूख लगी। तो ये भूख किसको लग रही है — शरीर को या जीवात्मा को? (P25-0117)

शरीर को लग रही है, शरीर की जरूरत है। लेकिन जीवात्मा उस भूख के माध्यम से उन वस्तुओं का स्वाद ले रहा है। स्वाद की जरूरत शरीर को नहीं है। आप बताइए — आपको भोजन से पोषण है कि स्वाद से पोषण है? शरीर निमित्त है, इंद्रियां निमित्त हैं। शरीर की जरूरत है, शरीर में आप हो, इस शरीर का उपयोग कर रहे हो, लेकिन स्वाद कौन ले रहा है? जीव चाहता है स्वाद, जीव स्वाद ले रहा है। आप इन आंखों से कोई रूप का स्वाद ले रहे हो, तो क्या इन आंखों को कोई बेनिफिट है? कान को मधुर संगीत से कोई लाभ है? कान तो निमित्त है। तो जीवात्मा स्वाद में फंसी हुई है — और वो आप ही हो।

प्रश्न: गुरु जी, अगर मेरी आंखें थकी हैं और मैं हरे पत्ते देख रही हूं, तो रिलैक्स तो आंखों को भी मिल रहा है — तो आंखों को भी बेनिफिट है ना? (P25-0118)

आंखों को क्या मिल रहा है? आंखें तो सिर्फ निमित्त हैं। कोई ज्यादा स्क्रीन पे काम कर लेगा तो थकान हो जाएगी — वो तो शरीर का आपने उपयोग किया, वो थक गई। उसे अच्छे या बुरे दृश्य से कोई मतलब नहीं है। ये तो शरीर थक गया है काम करके। जो रस है, वो अल्टीमेट जीवात्मा ले रही है। जीवात्मा रस में फंसी है, स्वाद में फंसी है। और जब तक स्वाद में है, तब तक वो जीवात्मा है। जिस दिन स्वाद की इच्छा छूटी, जीव का नाश हो जाएगा, फिर आत्मा बचेगी। मान का भी बहुत स्वाद है — बताओ मान से क्या लाभ है? दिखावे से कोई लाभ है? बड़ा बनने से कोई लाभ है? पोषण तो नहीं हो रहा ना; हम गिर रहे हैं। तो हमें स्वाद से निकलना पड़ेगा।

प्रश्न: गुरु जी, तो खाते वक्त क्या ध्यान दें — स्वाद आ रहा है कि नहीं आ रहा?

(P25-0119)

आए ना, लेकिन हमें स्वाद के लिए व्याकुल नहीं होना है, हमें शरीर के पोषण का ध्यान देना है। स्वाद आ रहा है तो आने दो। आप अच्छे से अच्छा बना के खाओ, 56 प्रकार का खाओ, लेकिन वो भोजन ईमानदारी का हो और किसी को बिना सताए। स्वाद के लिए लड़ाई मत करो। शरीर को नहीं भाए तो मत खाओ, लेकिन अपने शरीर की जरूरत देखो। अगर लग रहा है कि ये नहीं, यही चाहिए, तो इसका मतलब आप गिर जाओगे। हमें शरीर की जरूरत देखनी है, स्वाद नहीं। स्वाद मिले तो मिले — स्वाद अपने आप मिलता है, लेकिन आप अपने तरीके से पाना चाहते हो, उसमें फंस जाते हो। अगर स्वाद को ही प्राथमिकता दी कि स्वाद आना चाहिए तभी खाऊं, तो वो गड़बड़ है, वो अटकाव है।

प्रश्न: गुरु जी, आपने कहा कि इंद्रियों से जो रस ले रहे हैं, वो भटकाव छूट जाएगा तो जीव का नाश हो जाएगा। तो जीव के नाश का मतलब — क्या मैं मर जाऊंगी?

(P25-0120)

नहीं, मरने से मुक्त हो जाएगी। जन्म-मरण तभी तक है जब तक इच्छा है। जीव मतलब जिंदा इंसान नहीं — जीव मतलब बंधन में है। आत्मा ही इच्छा-अपेक्षा में जीव हो गई। जैसे कोई सामान्य व्यक्ति अपराध कर दे तो वो कैदी हो गया; जैसे ही कैदी जेल से बाहर आया, कैदी भी खत्म हो गया। जैसे पानी से बर्फ बना फ्रिज में जाने के बाद — आत्मा जब इस शरीर में आई तो आनंद में थी, फिर समाज में आई, लालच में, इच्छा-अपेक्षा में, वो जीवात्मा हो गई, जैसे पानी बर्फ बन गया। अब उसे मूल में लाना है, तो फ्रिज का कनेक्शन काट दो, बर्फ धीरे-धीरे पिघल जाएगा। बर्फ का क्या हुआ? नाश हुआ। बर्फ कहां गया, पता नहीं; मूल पानी में आ गया। वैसे ही जब इच्छा-अपेक्षा छूटी, जीव कहां गया पता नहीं — वो अपने मूल में आ जाएगा। रूप का नाश हुआ है, तत्व का नहीं। वो एक बदला हुआ रूप था, किसी कारण से था; जब वो कारण हटा तो उस रूप का नाश हो गया। इसीलिए कहा गया जगत मिथ्या है, क्योंकि जगत को हम रूप में देख रहे हैं।

प्रश्न: गुरु जी, जब बर्फ दोबारा पानी बन गई — आत्मा अपने सेंटर पॉइंट पर आ गई — तो अब उसकी यात्रा परमात्मा की तरफ होगी, या दोबारा इधर आने की भी संभावना हो सकती है? (P25-0121)

उसके पीछे स्वतंत्रता है। अगर वो चाहे तो आ सकता है, उसके ऊपर है। लेकिन ज्यादातर निकलने के बाद वो आएगा ही नहीं; वो मूल की यात्रा करेगा। कैदी वापस जेल थोड़ी जाएगा? एक तो इतनी जटिल यात्रा है — कैसे-कैसे निकाला उसने अपने आप को — तो वो जाएगा ही नहीं।

प्रश्न: गुरु जी, अगर आत्मा अपने मूल में आ गई, तो परमात्मा — जो इस आत्मा का भी मेन स्रोत है — वहां की यात्रा उसे करनी पड़ेगी या स्वतः हो जाएगी? (P25-0122)

अपने आप होगी। इसीलिए गर्भधारण के बाद मां की यात्रा अपने आप होती है; मां बनने के लिए कोई प्रयास नहीं करना पड़ता। प्रयास बस गर्भधारण के लिए करना पड़ता है, उसके बाद कोई प्रयास नहीं, सिर्फ इंतजार है। वैसे ही प्रयास बस अपने आप को छुड़ाने के लिए करना है, फिर वो अपने आप होगा।

प्रश्न: गुरु जी, जब हम साधना में बैठते हैं तो जो विचार आते हैं, हम फिर उनकी जड़ में जाते हैं कि उसके पीछे राग है या द्वेष है या और कोई दोष है — क्या उसका ऐसे पता लगाना पड़ता है? (P25-0123)

जब विचार आते हैं, या किसी व्यक्ति का भी विचार आएगा कि उसने कुछ कर्म किया है, तो उसी समय पता चल जाएगा कि सामने वाले से द्वेष है कि राग है। अब यह देखना है कि राग-द्वेष है क्यों — दो में से एक ही होगा, या राग होगा या द्वेष। तो देखना है कि उसके प्रति द्वेष क्यों बना, उसका कारण क्या है। जब तुम आखिरी में पहुंच जाओगे कि उसका कारण कौन था — मैं था कि वो था। अगर वो था, तो फिर मेरे कर्म का प्रारब्ध था; भोग लो, खत्म करो, छोड़ो। और मैं था, तो मैं क्षमा मांगता हूं। अगर वो जिंदा है तो जाकर क्षमा मांग लो, और नहीं रहा तो तस्वीरें होंगी — क्षमा मांग लो कि मैं जाने-अनजाने में समझ नहीं पाया, मेरी समझ कम थी, या मान के चक्कर में, बड़ाई के चक्कर में, वाहवाही के चक्कर में आकर मैंने तुम्हारा अपमान किया। आज तुम नहीं हो, जहां भी तुम हो वहां से मुझे क्षमा करो — क्योंकि तुम कहीं तो हो। और जब आप सच में क्षमा मांगोगे ना, तो आपको आंसू आएंगे, ये समझ लेना। बस ऐसा करो।

प्रश्न: गुरु जी, कल आपने "मैं आत्मा" और "आत्मा" बोला था — इसमें अंतर बताइए। दर्द किसको होता है? (P25-0124)

दर्द मेरा को होता है। जैसे मान लीजिए तेरे पास कोई वस्तु है, तूने अपने उपयोग के लिए खरीदी है; अगर टूट जाए तो तुझे दर्द होगा ना। लेकिन उसकी कीमत मिल गई हो और तेरे सामने ही टूट जाए, तो तू कहेगी अच्छा हुआ, मैं बच गई। तो दर्द किसमें था — उस वस्तु में था या मेरा के भाव में? लोग गाय-भैंस पालते हैं; अगर वो जवान है, दूध देती है और मर जाए, तो तुझे दुख होगा। लेकिन तूने उसका सौदा कर दिया और सौदा होते ही तेरे सामने मर जाए, तो दुख नहीं होगा, अंदर-अंदर बचने की हंसी आएगी कि मेरा नुकसान बच गया। तो दुख कहां था? मेरा में — मेरा शरीर, मेरी चीजें, मेरे लोग। और दुख किससे होता है? जिससे मुझे कुछ मिलता रहता है। पहला दुख मां-बाप से होता है; स्त्री पति के यहां जाती है तो पति से ज्यादा हो जाता है, मां से थोड़ा कम; आदमी को पत्नी से और अपने बच्चों से ज्यादा हो जाता है। अगर दर्द मां के लिए था तो वह हमेशा बना रहना चाहिए था ना? 20-30 साल के बाद एक अनजान आदमी मिलता है, उसके लिए सब कुछ हो जाता है, वही मेरा हो जाता है; भाई-बहन बीमार हो जाए तो सक्षम होने पर भी कह देंगे मेरे पास नहीं है, लेकिन घर में पति, पत्नी या बेटे को कुछ हो जाए तो सब कुछ बेच देंगे। लगाव धीरे-धीरे कम क्यों होता है? क्योंकि जो मेरी जरूरतों को पूरा करता है, वो मेरे लिए सबसे प्रिय है। मेरा बना सुख-स्वाद के चक्कर में — पांच इंद्रियों द्वारा शब्द, दृश्य, गंध, रस, स्पर्श से मैंने उससे सुख लिया, इसलिए उसे कुछ होता है तो दुख होता है। हम गुरु से भी शब्द लेते हैं, तो गुरु को भी कुछ होगा तो पीड़ा होगी — लेकिन यह पीड़ा तेरा उद्धार कर देगी, क्योंकि तू मुक्त पुरुष से जुड़ गई। जैसे आनंद ने बुद्ध से पूछा कि मुझे उपलब्धि कब होगी, तो बोले तुम सब जगह से छूट चुके हो, मुझ में फंस गए हो; और उनका शरीर छूटने के बाद आनंद की उपलब्धि हुई। तो जहां-जहां मेरा का भाव जकड़ा होगा, उसे कुछ भी होगा तो पीड़ा तुझे होगी।

प्रश्न: गुरु जी, आपने बताया था कि एक मैं अहम में होता है और एक परम सत्य में। तो हम परम सत्य में कैसे जाएंगे? (P25-0125)

एक मैं होता है अहम में — मैं ये हूँ, वैभव के द्वारा, लोगों के द्वारा — और एक होता है परम सत्य में। अहम वाला मैं छोड़कर उस परम सत्य में स्थिर होना है। सबसे खतरनाक है अहम मैं; यही हमें घुमा रहा है। मैं हर जगह सिद्ध करना चाहता हूँ कि मैं कुछ हूँ, बाहर अपने अस्तित्व को सिद्ध करना चाहता हूँ — जब तक बाहर अपने अस्तित्व को सिद्ध करोगे, तब तक तुम फंसे हो। परम सत्य में तब जाओगे जब अहम मैं का नाश होगा, और अहम मैं का नाश तब होगा जब तुम कुछ बनने से मुक्त हो जाओगे, उम्मीद से परे उठ जाओगे, हर तरह की उम्मीद छूट जाएगी। तब जाकर परम सत्य में आप स्थिर हो जाओगे। अहम मैं कैसे बना, इसे समझ लेना जरूरी है: पहले मेरी जरूरत ऐसे ही पूरी हो जाती थी, ना अहंकार था, ना कुछ — छोटा बच्चा सोने का बिस्किट छोड़ देगा और खाने वाला बिस्किट उठा लेगा, अभी उसमें मेरा-तेरा आया नहीं है। मेरा पहले जरूरत में बना। फिर मान का चक्कर देखा — सम्मान चाहिए, पद चाहिए, प्रतिष्ठा चाहिए, लोग मेरी इज्जत करें। तो पहले मैं मेरा का उपयोग अपनी जरूरत में करता था, अब उसका दुरुपयोग करने लगा — वैभव की ताकत, शरीर की ताकत, मेरे लोगों की ताकत का — और जितना दुरुपयोग करता गया, उतना अहम मैं तैयार होता गया और परम सत्य वाला मैं दबता चला गया, क्योंकि आप जिस पे काम करोगे वही बढ़ेगा। अब ये स्थिति हो गई है कि अहम मैं आपको जीने नहीं दे रहा; शांति ढूँढ रहा है, एकांत ढूँढ रहा है। जब तक इसका नाश नहीं होगा, तब तक तुम परम सत्य में पहुंच ही नहीं पाओगे, कहीं भी चले जाओ। इसका नाश कैसे हो? उस पे काम करना पड़ेगा। नदी-नाले, हिमालय पे जाने से कुछ नहीं होगा।

प्रश्न: गुरु जी, बार-बार प्रेजेंट मोमेंट से वृत्तियों में चला जाता हूं — क्या करूं?

(P25-0126)

कोई बात नहीं। वृत्तियों में कभी जिए हो, तभी तो जा रहे हो; ऐसे तो जाओगे नहीं। हमें वही लोग याद आते हैं, वही पता याद आता है, जिस पे मैं कभी जिया हूं। आने दो, लेकिन आगे ऐसे कुछ काम मत करो जिससे आपको पश्चाताप हो, घुटन हो, बेचैनी हो। पिछली तो सताएंगी — सताने दो, कोई बात नहीं। उसके लिए पश्चाताप करो, आंसू बहाओ, क्षमा मांगो; एकांत में बैठोगे तो घुटन होगी, बेचैनी होगी, आंसू आएंगे — आने दो। लेकिन आगे ऐसा ना करना, पिछला खत्म हो जाएगा। ये प्रकृति का नियम है कि आप बस छोड़ दो, देखते रहो, उसका नाश हो जाएगा। कितनी कार्रवाई लगी है, कितना मैल तगड़ा है — कोई मैल तुरंत पानी में डालते ही छूट जाता है, कोई मैल तो कपड़े को भी फाड़ देता है; हल्का होता है, लेकिन छूटता है। तो देख, कैसा मैल तूने अपने अंदर चढ़ाया है। लगाते वक्त तो नहीं सोचा कि किसको क्या बोल रहे हैं, किसके साथ क्या कर रहे हैं; जब उसका परिणाम आएगा तब पता चलेगा। और याद रखना, अगर पता नहीं है तो दोष नहीं लगेगा, तू फंसेगा नहीं; पता होने के बाद जब मैं वो कार्य करता हूं, उसी का अफसोस है। तो पिछले वाले के लिए पश्चाताप कर, आगे कुछ ऐसा ना करना, और आगे सत्कर्म कर — जरूरतमंद की सेवा।

प्रश्न: गुरु जी, मुझे इस संसार से हमेशा के लिए मुक्त होना है, खुद में रहना है। सबसे जल्दी वाला रास्ता बताओ। (P25-0127)

24 घंटे सत्कर्म करो ईमानदारी के साथ, और इच्छा से मुक्त हो जाओ।

प्रश्न: गुरु जी, ज्ञान मार्ग से उपलब्धि प्राप्त करने वाले गुरु और भक्ति मार्ग से उपलब्धि प्राप्त करने वाले गुरु की बातें क्या अलग-अलग होती हैं? (P25-0128)

तरीका अलग-अलग होता है, मूल एक ही होता है।

प्रश्न: गुरु जी, अहम भाव का अर्थ क्या है? (P25-0129)

अहम भाव का मतलब — मैं कुछ हूं, और मैं ये सिद्ध करने में लगा हूं, और दूसरा कोई मान नहीं रहा है।

प्रश्न: योगी जी नमन। क्या तीर्थ जाने से पाप कटते हैं? (P25-0130)

तीर्थ में क्या होता है? हर तरह के लोग आते हैं। तीर्थ में जाकर आप सीखते क्या हो, करते क्या हो — करने से ही कुछ इधर-उधर होता है। ऐसे जाने से पाप नहीं कट जाते। और जहां तीर्थ जा रहे हो, इसका मतलब किसी ने वहां तपस्या की, साधना की, किसी के नाम से तीर्थ स्थान बना। जब वो खुद भोगे, तो उनके यहां जाकर पापों से मुक्ति कैसे पाओगे?

प्रश्न: गुरु जी, हर दिन आखिरी समझ कर जीने का क्या मतलब? (P25-0131)

आपको यह देखना है कि मेरे द्वारा क्या हो रहा है — उस कर्म से बंधन तो नहीं हुआ। यही समझ के जीना है।

प्रश्न: गुरु जी, क्या चालाक, राक्षसी लोगों के साथ भी ईमानदार रहना चाहिए?

(P25-0132)

अपने आप को ईमानदारी से वहां से कैसे भी निकाल लो। अगर किसी ने अधर्म की शुरुआत की, तो आप तो धर्म से चलो; लेकिन अधर्म करना पड़ रहा है, तो अधर्म के साथ निकल जाओ। तब आप अधार्मिक नहीं हुए, क्योंकि गलत की शुरुआत उसने की थी, आपने नहीं। हो सकता है सही से शुरुआत करके आप ना निकल पाओ, तो गलत का उपयोग करके निकल जाओ, क्योंकि आप तो गलत नहीं हो; आप रहोगे तभी तो कुछ कर पाओगे। जैसे मल्ल युद्ध में कृष्ण भगवान ने इशारा किया कि दुर्योधन की जंघा पे मारो, नहीं तो कुछ कर नहीं पाओगे। पूछा गया कि आपने इशारा क्यों किया, ये तो अधर्म है — तो बोले अधर्म की शुरुआत तो उन्होंने की थी, अभिमन्यु को मारा। तुम धार्मिक व्यक्ति हो; अगर वो व्यक्ति अधर्म से तुम्हें पराजित करना चाह रहा है, तो तुम अधर्म से भी उससे जीत जाओ, क्योंकि तुम सही व्यक्ति हो, समाज के लिए कुछ कर सकते हो; वो तो समाज को दूषित करेगा। अगर तुम सोचोगे कि हम धर्म से ही लड़ेंगे, तो तुम मारे जाओगे और अधर्म बढ़ता जाएगा। जहां जिसकी जरूरत हो, वह करके निकलो — यही ज्ञान है। अधर्मी अधर्म से मांग रहा है तो उसको अधर्म में ही बताओ; वहां आपका धर्म काम नहीं करेगा। कोई तलवार से तुम्हें काटने आए और तुम गुलाब का फूल लेकर खड़े हो जाओ तो क्या होगा?

प्रश्न: गुरु जी, मेरे बच्चे हैं — लड़का 14 साल का और लड़की 12 साल की। मैं अपनी धर्मपत्नी को बोल रहा हूँ कि इनको या तो (गुरुकुल जैसी) पुरानी पढ़ाई पढ़ाएं, या घर पे रखकर आज वाली पढ़ाई पढ़ाएं — पर ये आज वाली पढ़ाई तो दानव ही बनाती है? (P25-0133)

जरूरी नहीं है कि ये वाली पढ़ाई दानव बनाएगी। आप इस पढ़ाई के साथ संस्कार भी दे सकते हो। पहले गुरुकुल था तो क्या राक्षस नहीं थे? गुरुकुल में पढ़कर लोग राक्षस नहीं हुए हैं क्या? हुए हैं ना — कृष्ण भगवान के साथ विद्या लेने वाले बहुत शिष्य राक्षस हो गए थे। तो यह नहीं कह सकते। आप संस्कार दीजिए और जैसी समाज की व्यवस्था है उसमें पढ़ाइए। समाज की मांग क्या है, अभी की व्यवस्था क्या है — आधुनिक युग है, तो उसको क्या जरूरत है वो देखो। समाज के हिसाब से चलना पड़ेगा, देश-काल-स्थिति-परिस्थिति के हिसाब से चलना पड़ेगा। देखो वो क्या करना चाहता है, उसका साथ दो। उसे उचित-अनुचित समझाओ, संस्कार दो — जरूरतमंद की सेवा, अच्छे से बातचीत करना, उठना-बैठना, बड़ों-छोटों के साथ कैसे बात की जाती है, ये सिखाओ। पहला तो संस्कार दीजिए।

प्रश्न: गुरुदेव, अंदर की यात्रा का एक प्रश्न है — आत्मज्ञान के बाद क्या ब्रह्म को जाना जा सकता है? (P25-0134)

ब्रह्म खुद चाहे तो आपको जना सकता है, आप उसे नहीं जान सकते। ब्रह्म की बात छोड़ो, मैं इंसान की बात कर रहा हूँ — इस देश में एक प्राइम मिनिस्टर से मिलना हो तो आपका कर्तव्य क्या है? एक एप्लीकेशन देना। वो जब चाहे आपसे मिल सकता है, जहां से चाहे आपको बुलवा सकता है, आपका परिवार नहीं रोक सकता; लेकिन आप उससे नहीं मिल सकते। आप एप्लीकेशन दोगे तो वो देखेगा कि क्यों मिलना चाहते हो, मिलने लायक हो कि नहीं, समाज में ऐसा कुछ काम किया कि लाखों-करोड़ों का कल्याण हुआ। एक इंसान का यह हाल है, तो परमात्मा चाहे जिसको भी अपने आपको जना सकता है कि देखो ये मैं हूँ; आप उसे नहीं जान सकते। योग्यता आपको लानी पड़ेगी — वो देगा तो सबको देता ना। जो भी व्यक्ति उस योग्य होता है, वो उसे जना देता है। हम केवल योग्य हो सकते हैं, अपनी योग्यता बना सकते हैं। योग्य हो जाओगे तो एक समय ऐसा आएगा कि आप उसे देखोगे और वो आपको देखेगा; तुम कहोगे मैंने देख लिया — नहीं, उसने दिखा दिया, तुम्हारी देखने की ताकत नहीं थी। सोचिए, एक प्राइम मिनिस्टर से ऐसे मिलने के लिए कि वो पूछे "आप वही व्यक्ति हो?" — आपको कितने साल लग रहे हैं, और वो भी पक्का नहीं; पहले भी हो सकता है, बाद में भी, और ना भी हो। एक देश का एक प्रधानमंत्री, विश्व में कितने देश, फिर अनंत ब्रह्मांड — और उन अनंत ब्रह्मांडों के मालिक से मिलने की यात्रा कर रहे हो, शाम को आए और सुबह कह रहे हो कुछ हुआ नहीं! केवल उतावलेपन से कुछ नहीं होगा, कुछ करना पड़ेगा।

प्रश्न: गुरु जी, क्या काम वासना ही सबसे बड़ा सुख है? (P25-0135)

अब आपको एक हफ्ते भोजन ना दिया जाए, और काम भाव के लिए सब रख दिया जाए — आप पुरुष हो तो स्त्री, स्त्री हो तो पुरुष — तो आप पहले भोजन करोगे या पहले काम भाव करोगे? सबसे पहले भोजन करोगे, तभी वो कर पाओगे। जीवन में भोजन ही सबसे जरूरी है, उसके बाद और कुछ। शरीर में ताकत ही नहीं है तो कुछ भी नहीं कहोगे, कहोगे निकल लो — पहले भोजन की व्यवस्था करो।

प्रश्न: गुरु जी, ईश्वर तो एक है ना, फिर लोगों ने धर्म के नाम पर उनका विभाजन क्यों कर दिया? (P25-0136)

लोग धर्म के नाम पर कुछ भी कर देंगे; आपको क्या करना है, वो देखो। लोगों ने तो बहुत कुछ कहा — क्या सब मानते हो? यहां दो तरह के लोग बात करने वाले हैं: एक कहते हैं ईश्वर एक है, एक कहते हैं अनेक हैं। तो आप किसकी बात मानोगे? जो खोजी रहता है, वह ना कहता है एक है ना दो है; वो कहता है मैं अपना काम करूंगा और निकल लूंगा — ईश्वर होगा तो मिल लेगा; दो होंगे तो भी देख लेंगे, एक होगा तो भी देख लेंगे। जिस भाव से आप यात्रा कर रहे हो वही है। अभी यहां जितने लोग आए हैं, यहां से निकलेंगे तो सब अलग-अलग रास्तों से जाएंगे, लेकिन पहुंचेंगे अपने-अपने घर। अब यह कहे तुम मेरे पते पर चले जाओ — तो इनको इनके ही पते पे खड़ा किया जाएगा; कोई कहे "सब एक ही तो है", तो क्या दूसरे के पते पे एंट्री मिलेगी? नहीं मिलेगी। तो तू अपनी खोज कर ले। बच्चों को संस्कार सिखाइए, कर्म सिखाइए, ईमानदारी सिखाइए, सत्कर्म सिखाइए, बोलने का तरीका, उठने-बैठने का तरीका, मर्यादा में जीना सिखाइए, उनसे प्रत्यक्ष करवाइए — संस्कारी बनाइए, यह जरूरी है।

प्रश्न: गुरु जी, अन्नमय से आनंदमय कोश — ये पांच कोश हैं ना, थोड़ा इनके बारे में बता दीजिए। (P25-0137)

हमने इनका अध्ययन ही नहीं किया, तो क्या बताएं — मैं उस सब में गया ही नहीं, जिससे मेरा कोई मतलब ही नहीं था; मुझे तो सीधा-सीधा निकलना था। मैंने देखा कि सात चक्र हैं, तो सोचा मेन कौन है — बस इसको खोल लो, बाकी अपने आप खुल जाएंगे। इतना समय नहीं था कि एक-एक को खोलें। एक राज्य पर कब्जा करना है तो राजा को पकड़ लो, कौन सैनिकों को ढूंढे — सैनिक बड़े हैवी होते हैं, जल्दी बस में आएंगे नहीं। तो मैं सहस्रार के पीछे पड़ा। फालतू एक-एक चक्र खोलो, ये करो, वो करो, ये योगा करो — हमसे ये सब नहीं होगा। ये कैसे खुलेगा? तब पता चला कि बस आप इच्छा-अपेक्षा से मुक्त हो जाओ, उम्मीद छोड़ दो, खुल जाएगा। जब सब ज्ञान आत्मा में है, आत्मा से ज्ञान है, तो इसको खोलकर आत्मज्ञान करा लो, सब ज्ञान बाहर आएगा; जब सब ज्ञान अंदर है तो हम काहे को बाहर घूमें, भटकें। समय किसी के पास नहीं है। हार्ट कैसे काम करता है, किडनी कैसे काम करती है — आप जानो ना जानो, काम तो करेगा; मैं हार्ट सर्जन बनने वाला नहीं हूं, जिस दिन जरूरत पड़ी उस दिन चले जाना। जितने में मेरा काम चल जाए उतना जानो और निकल लो — सदुपयोग करो, जरूरत में जियो, निकल लो। हर विषय में एक्सपर्ट होना जरूरी नहीं। ₹200 की टोपी सिर पर पहनी है, तो उसे बनाना सीखने जाओगे या पैसे देकर ले आओगे? बेमतलब की बातों में उलझकर समय खराब नहीं करना चाहिए।

प्रश्न: गुरु जी, मुझ पर कोई जिम्मेदारी नहीं है। क्या मुझे सन्यास लेना चाहिए, या विवाह करते हुए आत्मज्ञान के रास्ते पर चलना चाहिए? (P25-0138)

अपनी जरूरत देखो। विवाह के साथ भी कर सकते हो, विवाह नहीं करके भी कर सकते हो — आपके ऊपर है। शरीर की जरूरत देख लो। ऐसा ना हो कि अभी विवाह की अवस्था है तो ना करो, और बाद में पछतावा हो कि यार कर लिया होता तो अच्छा था, इधर तो कुछ नहीं मिला। ऐसे बहुत लोग रोते हैं। विवाह बहुत सोच-समझकर लेने वाला फैसला है।

प्रश्न: गुरु जी, समय बीत जाने के बाद समझ क्यों आती है, पहले क्यों नहीं? अक्सर देखा है कि आदमी 40-50 पार करता है तब समझता है कि मैंने क्या कर दिया।

(P25-0139)

समझ उससे पहले भी थी, लेकिन रसपान के चक्कर में वो उस समझ को हटा के रखता था — बड़ा बनने के चक्कर में, मान के चक्कर में, प्रतिष्ठा के चक्कर में, यश-समृद्धि के चक्कर में, नाम-शोहरत-पैसे के चक्कर में। और जब 50-60 साल बाद उसकी इंद्रियां कमजोर हो गईं, जिस बल के द्वारा वो बलवान बन रहा था वो कमजोर हो गया — समय तो गया, तब समझ आ गई। समझ पहले भी थी, लेकिन अब आत्मिक कल्याण करना चाह रहा है तो अब हो नहीं रहा। एक बात को बहुत गहराई से समझिए — समझ है तभी बेईमानी-दुष्कर्म कर रहा है, नहीं तो कर ही नहीं पाता। आपने कभी मंदबुद्धि, अबोध, पागल को बेईमानी-दुष्कर्म करते देखा है? नहीं, क्योंकि उनके पास अच्छे-बुरे की समझ नहीं है।

प्रश्न: गुरु जी, जब इंद्रियां काम करना बंद कर दें, तब कोई सरेंडर कर दे — क्या इसमें भी चालाकी है? (P25-0140)

वही तो — बंदूक की गोली खत्म हो गई और कह रहा है मैंने हाथ उठा दिया। जैसे ही खटखट दबाया और उनको पता चल गया कि गोली नहीं है, अब तुम्हारे हाथ उठाने का मतलब नहीं है। अगर बंदूक में गोली होती तब कहते कि ठीक है भाई, तेरे समर्पण का मतलब है। जब समझ गए कि अब पकड़ा जाऊंगा और कहा ये लो बंदूक, उठा दिए हाथ — इस समर्पण का कोई मतलब नहीं है। समर्पण नहीं हुआ, ये तो मजबूरी हुई। अब हाथ-पैर काम ही नहीं कर रहे, तो चालाकी से सोच रहा है मैं यहां से निकल जाऊं। जब तक कर सकते थे तो किया नहीं — ऐसा नहीं कि समझ नहीं थी, समझ तब भी थी। अपराधी पकड़ा जाने के बाद कहे मुझे छोड़ दो, मैंने अपराध स्वीकार किया — तो छोड़ दोगे? नहीं। अगर पहले आकर समर्पण कर दिया होता तो कुछ इधर-उधर किया जाता; सारी इंकवायरी के बाद, सबको परेशान करने के बाद जब पकड़ा गया तब बोला मैं समर्पण करता हूं — अब समर्पण के लायक तुम रहे कहां?

प्रश्न: गुरु जी, क्या इसका जिम्मेदार वह व्यक्ति खुद है, या समाज — परिवार, गांव, सोसाइटी — का भी इसमें हाथ है? (P25-0141)

मूल जिम्मेदार वो है। समाज में दो तरह के लोग हैं — आप बेईमानी-दुष्कर्म में जाएंगे तब भी आपकी सहायता करेंगे, उनका काम यही है; आप ईमानदारी-सत्कर्म में जाएंगे तब भी आपकी सहायता करेंगे। दो तरह के लोग समाज में हैं — हम-आप किस तरफ जाते हो, देख लो। जैसे घर में लड़का नहीं कमा रहा, मां-बाप प्रेशर करते हैं, बार-बार टॉर्चर करते हैं तो वो उल्टा-सीधा कर लेता है — सीधे से भी तो कमाया जा सकता था। ज्यादा टॉर्चर कर रहे हैं तो उस परिवार को छोड़ दो।

प्रश्न: गुरु जी, कोई आदमी 60-70 साल के बाद समझो और समर्पण कर दे, जितना पद से कमाया वो सत्कर्म में लगा दे और बोलचाल में ईमानदार रहे — क्या वो इसी जन्म में मुक्त हो सकता है? (P25-0142)

अगर सब कर दे, पूरा का पूरा लगा दे — ऐसा नहीं कि बेटे को चाबी दे दी, सारा लूट का माल वहां, और आकर बोला कि मैं अब समर्पण करता हूं; माल कहां है? 100% जितना भी माल है दे दे, तो किसी जन्म में मुक्त भी हो सकता है। पूरी तरह तो नहीं बोला जा सकता, लेकिन कुछ तो कम होगा ही — कम होगा, खत्म नहीं होगा। फिर अगला जन्म होगा तो चक्कर चालू हो जाएगा, लेकिन कुछ तो कम रहेगा, तो समझ तो रहेगी। अगला जन्म चौरासी में कहीं भी हो सकता है; अभी से सरेंडर कर दे तो जहां से भी अगला जन्म मिलेगा, वहां से सही करेगा — इतना तो हो ही जाएगा। लेकिन आप लोग तो जवान हो, आप लोग तो कर दो।

प्रश्न: गुरु जी, लोग सब बेईमानी से कमा कर बेटे को दे देते हैं और कहते हैं अब मुझे कुछ नहीं चाहिए — क्या ये उनकी चालाकी है? (P25-0143)

वो तो परेशान ही है — सारी जिंदगी परेशान था, अभी परेशान है, और मरेगा भी परेशान। जितना धन है दबा दिया, और फिर आकर कह रहे हैं कि मुझे कुछ नहीं चाहिए, मुझे आत्मज्ञान चाहिए, परमात्मा से मिलना है। माल कहां है? "माल तो बच्चों को दे दिया, माल तो हमने लिया ही नहीं" — तो दुनिया देती किसको है? अपने को! समाज को दे दिए होते, समाज में बांट दिए होते। इसमें भी चालाकी है कि बच्चे भोगें, मुझे छोड़ दो — लेकिन बच्चे नहीं भोगेंगे, बच्चे तो अपने कर्म का भोगेंगे; बाप को भोगना पड़ेगा। बच्चे भी अगर बेईमानी से जिएं तो वो भी भोगेंगे; अगर उस पैसे का उन्होंने सदुपयोग किया तो वो नहीं भोगेंगे।

प्रश्न: गुरु जी, अगर बेईमानी का पैसा बच्चों के पास जाएगा, तो वो तो सत्कर्म कर ही नहीं पाएंगे, क्योंकि पैसा बेईमानी का है? (P25-0144)

नहीं, पैसा बेईमानी का है लेकिन बेईमान हट चुका है — अब वो पैसा उनका हो गया। पैसा जिसके पास गया, जैसा वो है वैसा बन जाता है। जैसे पानी जिस पात्र में डालो उस पात्र में समा जाता है, वैसे पैसा जिसके हाथ में गया वैसा तुरंत हो गया। बेईमान ने ईमानदार को दिन भर के काम की मजदूरी दे दी, तो वही पैसा अशुद्ध से शुद्ध हो गया। पैसा घूमता रहता है, ना शुद्ध है ना अशुद्ध — मतलब ये कि आपके पास आया कैसे। प्रह्लाद को भी बेईमानी की रोटी खिलाई थी, लेकिन प्रह्लाद परम भक्त हो गए। 18 तक ज्यादातर अबोधता ही रहती है; समझने लायक हुए, कर्म का सिद्धांत पता चला, उसके बाद भी अगर बाप-मां का साथ दिए तो वो भी भ्रष्ट हो रहे थे। लेकिन जब समझ में आया और उन्होंने तुरंत साथ छोड़ दिया, तो एक परसेंट भी नहीं भोगेंगे।

प्रश्न: गुरु जी, बाप ने बेईमानी से कमा कर घर बनाया, तो उसमें शांति कैसे होगी — क्या ऐसा घर नेगेटिव एनर्जी देता है? (P25-0145)

बच्चों में तो समझ नहीं है, बच्चे को पता भी नहीं है। बच्चे बड़े हो गए, उन्हें समझ हो गई, उसके बाद उन्होंने स्वीकार किया, उनका साथ दिया, तब वो भी भागीदार हैं। देखो, एक ही आदमी से एक को पॉजिटिव एनर्जी मिलती है, एक को नेगेटिव मिलती है, एक को कुछ नहीं मिलता, किसी को सात्विक एनर्जी मिलती है — आदमी तो एक ही है। तो क्या आदमी में पॉजिटिव-नेगेटिव एनर्जी है? नहीं; किस भाव से सामने वाला उसके पास गया है — जैसा जिसका भाव है वैसी एनर्जी है। देखा नहीं है क्या, उसी घर में बच्चे मस्ती से खा-पी रहे हैं, बढ़िया गाड़ी लेके घूम रहे हैं, और परेशान कौन है? बाप भोग रहा है। समझ आ जाए तो उससे निकल लेना चाहिए।

प्रश्न: गुरु जी, तो प्रकृति इसमें क्या भूमिका निभाती है — क्या वो समझ देती है?

(P25-0146)

कुछ नहीं करती। आप जैसा करते हो, प्रकृति में वैसा आपको मिलता है — सीधी सी बात है। नदी बह रही है; आपने जैसा पात्र डाल के पानी निकाला, वैसा आपके पात्र में आ गया। नदी अपने से आपके पात्र में पानी नहीं डालती।

प्रश्न: गुरु जी, पहले के लोग बहुत सच्चे होते थे। आज झूठ और गलत में कहीं ना कहीं समाज भी तो हिस्सेदारी निभा रहा है? (P25-0147)

समाज कौन है? हमसे समाज है कि समाज से हम हैं? एक-एक मिलके समाज बना है — हमसे समाज है, फिर जैसे हम रहेंगे वैसा हमें समाज मिलेगा। तीन प्रवृत्तियां हैं — देव प्रवृत्ति, मानव प्रवृत्ति, राक्षस प्रवृत्ति। जैसा आप कर्म करोगे वैसे लोग आपको मिलने लगेंगे, उसी टाइप के लोग इकट्ठा हो जाएंगे। भीड़ तीन जगह है — सात्विक, राजसी, तामसी; सबसे ज्यादा भीड़ इस समय तामसी में है, उसके बाद राजसी में, और सबसे कम सात्विक में। गहराई में दूसरा है ही नहीं — सिर्फ हम जिम्मेदार हैं। हम शैतान हैं तो हमें शैतान मिलेंगे, देवता हैं तो देवता मिलेंगे, मानव हैं तो मानव मिलेंगे। और इसको काटने के लिए एक ही चीज — तुरंत ईमानदारी और सत्कर्म। ईमानदारी से आगे का बंधन नहीं बचेगा, और सत्कर्म से भोगने की क्षमता मिल जाएगी — जैसे हाथ की चीर-फाड़ से पहले सुन्न करने का इंजेक्शन लगा देते हैं तो दर्द नहीं होता; सत्कर्म अपना लिया तो आप भोगोगे, लेकिन भोगने में तकलीफ नहीं होगी।

प्रश्न: गुरु जी, ऐसा देखा गया है कि जिन्होंने बहुत ज्यादा पाप किया, उन्होंने छोड़ा भी तो तुरंत और पूरी तरह छोड़ा — जैसे अंगुलिमाल? (P25-0148)

अंगुलिमाल जब भिक्षु बनकर गया तो गांव वालों ने उसे पत्थर मारे — सिर फूट गया, कई जगह चोट लगी, खून निकल रहा था। जिस अंगुलिमाल के नाम से लोग डरते थे, उस रास्ते से कोई जाता नहीं था, उसी को लोगों ने पत्थर मारकर अपना आक्रोश निकाला, लेकिन वो किसी से कुछ नहीं बोला — जब छोड़ा तो पूरी तरह छोड़ा। मेन यही है कि छोड़ना है तो पूरा ही छोड़ना, परसेंटेज में नहीं। एक नाव में एक छेद है, एक में 99 — परिणाम दोनों का एक ही आएगा। तुम हंस रहे हो कि मेरे में एक ही बचा है और तुम में 99 हैं; नहीं, गलती कर रहे हो — समाज में तुलना में तुम्हें लग रहा है कि मैं आगे हूँ, लेकिन दोनों एक ही जगह जाओगे। जिसमें एक छेद है वो धीरे-धीरे डूबेगा, जिसमें 100 हैं वो तुरंत डूब जाएगा। मैं तो यही कहूंगा — भैया, पूरी तरह अपना लो; अभी भी समझ है, समय है। ईमानदारी-सत्कर्म सबसे आसान है जिंदगी में — तुम भी खुश, समाज भी खुश। बेईमानी-दुष्कर्म से तुम भी दुखी, परिवार भी दुखी, समाज भी दुखी, और पकड़े जाने का हमेशा डर — कब पोल ना खुल जाए।

प्रश्न: गुरु जी, अगर हम ईमानदारी से काम करें तो थकान नहीं होती? (P25-0149)

ईमानदारी से थकान नहीं होती, थकान तो बेईमानी से होती है। बेईमानी में तुम्हें सब नोच डालेंगे, तुम थक जाओगे। ईमानदारी में थकान नहीं होती क्योंकि उसमें तुम होते हो — और तुम हो तो थकान कहां? अगर आप ईमानदारी से जीते हो तो आपको कोई नोचेगा नहीं, और नोचेगा नहीं तो आप थकोगे नहीं। इसलिए इसको अपना लो, 101% — पूरी तरह, तुरंत ईमानदारी पकड़ते ही मुक्ति भी हो रही है। ईमानदारी में आप हो और आप हो तो आनंद है; बेईमानी में झुंड है, तो बेईमानी में अशांति है।

प्रश्न: गुरु जी, आत्मज्ञानी पुरुष को भी पिछले किए कर्म का फल तो भोगना ही पड़ेगा — तो भोगते समय क्या उसे शारीरिक पीड़ा होती है? (P25-0150)

शरीर को होती है, उसे नहीं — उसे दुख नहीं होता। ना दुख, ना सुख, ना पीड़ा — बस देखेगा। जैसे हम दूसरे की पीड़ा देखते हैं, वैसे ही वो अपनी पीड़ा भी देखेगा। और जैसे आप मानवता के वश दूसरे को बचाते हैं, वैसे वो अपनी पीड़ा को भी घटाएगा, क्योंकि शरीर से काम करना है। ये अलग होना आत्मज्ञान के बाद ही होता है, पहले कैसे होगा? घी तभी दूध से निकलेगा जब दूध मिट जाएगा।

प्रश्न: गुरु जी, आत्मज्ञान पूरी तरह से ईमानदारी और सत्कर्म से होगा? (P25-0151)

एकदम — ईमानदारी, सत्कर्म, और योग्यता से ज्यादा पाने की इच्छा का त्याग। बस बात खत्म। मैं कह रहा हूं एक पॉइंट को पकड़ लो — योग्यता से ज्यादा पाने की इच्छा का त्याग। ये पकड़ेंगे तो तीनों ऑटोमेटिक पकड़े जाएंगे।

प्रश्न: गुरु जी, कर्म का जो सिद्धांत है, जो लेन-देन हो रहा है — आत्मज्ञानी जब देखता है कि शरीर भोग रहा है, तो वो कर्म किसका रहता है, उसका या शरीर का? कर्म तो उसका ही है ना? (P25-0152)

समझ में आ जाएगा — एक हिसाब से शरीर ही भोगेगा, उसको भोगना हुआ ही नहीं; वो तो दूसरे के जैसा देख रहा है। जैसे मान लीजिए आपकी शादी हुई; अब एक-दूसरे को कुछ भी हो रहा है तो दोनों को पीड़ा हो रही है। लेकिन तलाक हो गया, अब एक-दूसरे को कुछ भी हो रहा है तो पीड़ा कहां गई? जब तक मेरा था तभी तक पीड़ा थी — तेरा मैं पीड़ा नहीं होती, पीड़ा मेरा में होती है। शरीर से अलग होने के बाद ये भाव छूट जाता है। उम्मीद छूटेगी तभी आप शरीर से अलग हो पाओगे; जब तक उम्मीद है, नहीं हो पाओगे — क्योंकि शरीर के द्वारा ही तो आप उम्मीद में हो। बाहर के रूप से मुक्त होंगे, स्वरूप में आएंगे, तो इस शरीर का अलगाव देख पाएंगे; उस रूप में फंसे हैं तो अपने आप को शरीर ही मानेंगे। "कुछ नहीं चाहिए" में आ जाएंगे तो स्वरूप में आ जाएंगे, आत्मा का बोध होगा, आत्मज्ञान होगा; और इस रूप से मुक्त होंगे तब ब्रह्म ज्ञान होगा — ये यात्रा है।

प्रश्न: गुरु जी, शरीर की पीड़ा सहते हुए "कुछ नहीं चाहिए" कैसे हो? वो तो पहले से पीड़ा में है, तो मन शांत होगा नहीं। (P25-0153)

पीड़ा किसमें है, ये देखिए — शरीर में पीड़ा है। आपसे कहा जाता है कहां चोट लगी, तो कहते हो ना "मेरे पैर में"? तो पैर किसका है? तुम्हारा — तो तुम उससे अलग हुए ना? तुम कहोगे ये तो बात की बात है — अरे, बातों में ही तो ज्ञान छिपा हुआ है। अब मैं आपको बीज दे दूँ और बोलूँ इसमें पेड़ है, तो तुम कहोगे तुरंत काट के दिखाओ कहां पेड़ है — कैसे? मैं प्रोसेस बता रहा हूँ कि इसे कैसे लगाना है। उम्मीद छोड़ दो, बस। पीड़ा भोग के उम्मीद छोड़ देना — उसके लिए धैर्य बनाना पड़ेगा। जब तक पीड़ा हो रही है होने दो; जब पीड़ा खत्म होगी तब देखेंगे — इंतजार करते रहो, कभी ना कभी पीड़ा कम होगी।

प्रश्न: गुरु जी, क्या विधि से ज्ञान का कोई कनेक्ट आता है — कोई विधि पहुंचा सकती है? (P25-0154)

विधियां परेशान जरूर कर सकती हैं, पहुंचा नहीं सकतीं। "साक्षी भाव बनो, तुम शरीर नहीं हो, तुम आत्मा हो" — ऐसा समझने से कुछ नहीं होगा जब तक प्रत्यक्ष नहीं होगा। और प्रत्यक्ष तभी होगा जब आप प्रत्यक्ष के लायक काम करोगे।

प्रश्न: गुरु जी, दुष्कर्म का फल कभी तुरंत मिलता है, कभी बाद में। अगर हम किसी को दुख दे रहे हैं, सता रहे हैं या उसके साथ बेईमानी कर रहे हैं, तो क्या अपना कर्म तो बना ही रहे हैं, साथ में उसका पाप कर्म भी अपने सिर पर ले रहे हैं? (P25-0155)

तुम्हें अपने कर्मों का परिणाम मिलेगा, उसे उसके कर्मों का परिणाम मिलेगा — सीधी सी बात है। ज्यादा बात करने की जरूरत नहीं है, दो ही रास्ते हैं। एक ही रास्ता आपके पास है जीवन जीने का उचित तरीके से — ईमानदारी से कर्म अपना लो, ज्यादा खींचो मत, और सीधा निकल लो।

प्रश्न: गुरु जी, मेरे को समझ में नहीं आता — सब पूछते रहते हैं आत्मज्ञान कैसे होता है, कैसे होता है। पर पहले तो आप जो तीन-चार पॉइंट देते हैं, उनको प्रैक्टिस करके देखना है ना? (P25-0156)

इतना पक्का है, मैं कह रहा हूँ — ईमानदारी, सत्कर्म, योग्यता से ज्यादा पाने की इच्छा का त्याग — तो होता ही होता है, समझ में भी आता है। दो ही रास्ते हैं आपको जीने के लिए — एक बेईमानी-दुष्कर्म, एक ईमानदारी-सत्कर्म। और कोई तीसरा रास्ता नहीं है। बेईमानी-दुष्कर्म में हो तो आप परेशान हो, ईमानदारी-सत्कर्म में हो तो आप आनंद में हो — इतनी सी बात है। हर रोज उठने के बाद इन तीन को पकड़ लो — ईमानदारी, सत्कर्म, योग्यता से ज्यादा पाने की इच्छा का त्याग — बस बात खत्म। धीरे-धीरे होगा।

प्रश्न: गुरु जी, अगर कोई अपमान कर जाए तो क्या करना चाहिए? मन में यह आता है कि कोई अपमान करता है तो कोई लेन-देन हो रहा होगा, तो सह लें? (P25-0157)

अपमान करना मत, सहना भी मत — क्योंकि जब अपमान करना गलत है तो अपमान सहना भी गलत है। धर्म यही कहता है — अपमान करूंगा नहीं, सहूंगा नहीं। उससे पूछिए — आप सिद्ध करिए मैंने अपमान वाला काम किया है; और नहीं किया तो क्यों अपमान कर रहे हो? क्योंकि मैं भी समाज का एक हिस्सा हूँ, अपमान अपमान होता है, चाहे आपका हो चाहे मेरा, दुखी तो एक व्यक्ति रहेगा। आप बता दीजिए क्यों अपमान किया, तो मैं अपनी वो गलती नहीं करूंगा, नहीं तो आगे भी मेरा अपमान होता रहेगा। और अगर मैं सही हूँ और मैंने आपको छोड़ दिया, तो आगे आप दूसरों का अपमान करोगे। तो हर तरीके से उसे रोकने का प्रयास करो। हम क्यों लोगों को जवाब देते हैं? इसलिए कि वो दूसरों से ऐसा ना करे। जवाब मांगने का सामर्थ्य नहीं है तो सामर्थ्यवान बनो, मेहनत करके पहुंचो। युद्ध के मैदान में कूद कर कह रहे हो कि मुझे तलवार चलाना नहीं आता — तो सामने वाला क्या करेगा? इसीलिए सामर्थ्यवान बनो, सीधी सी बात है।

प्रश्न: बाबा, अशांत अवस्था में शांत कैसे हुआ जाता है? (P25-0158)

कभी हो ही नहीं सकता। कंकड़ मार रहे हो और बोल रहे हो पानी स्थिर हो। आप एक तरफ कंकड़ मार रहे हो पानी में और कह रहे हो पानी स्थिर हो जाए — नहीं हो पाएगा। अशांति वाला काम करना बंद कर दो, बस बात खत्म — शांत में आ जाएंगे।

प्रश्न: गुरु जी, अगर हमारी आध्यात्मिक यात्रा में कोई बाधा बनता है तो क्या करें? (P25-0159)

छोड़ दो उसे, और क्या। त्याग कर दो — त्याग ही परम सुख है।

प्रश्न: गुरु जी, योग्यता वाली बात ठीक नहीं लगी — कौन डिसाइड करता है कि कितनी योग्यता है? (P25-0160)

आइए, मैं डिसाइड कर दूंगा, हम बता देंगे आपकी योग्यता क्या है। सबको अपनी योग्यता का पता है — जानवर तक को पता है। पशुओं में देखिए, वही कुत्ते हैं — एक कुत्ते से लड़ जाते हैं, एक कुत्ते के पास से एकदम हट जाते हैं। छोटा सा कुत्ता भी कैसे लड़ जाता है। पशु-पक्षी को भी अपनी योग्यता का पता है, तुम तो मानव हो — सबको पता है।

प्रश्न: गुरु जी, संत कौन है और किन लक्षणों के आधार पर कहा जाए कि वह संत है? (P25-0161)

वो संत है जो कोई भी व्यक्ति अगर लोगों के लिए जीने लगे — धन से, तन से, ज्ञान से, उसके पास जो कुछ है उससे लोगों के लिए जीने लगे, समाज के हित के लिए काम करने लगे — वो संत है।

प्रश्न: गुरु जी, आप बेईमानी का पैसा लेने से क्यों मना करते हो? आपको बहुत से लोग पैसे देने आते हैं, फिर भी आप पूछते हैं कि यह पैसा बेईमानी का तो नहीं है।

(P25-0162)

हां, नहीं लेता मैं। ईमानदारी का है तो दो, बेईमानी का है तो मत दो। क्योंकि आप मुझे तो दे नहीं रहे हो, मेरे इस काम को दे रहे हो — और इस काम का उपयोग समाज कर रहा है। ईमानदारी का पैसा होगा तो समाज को लाभ होगा, उसे भी एहसास होगा, उसकी भी आत्मिक स्थिति ऊपर उठेगी। देने वाले का भी है, जहां उपयोग हो रहा है उनका भी है — सबका है; सोसाइटी का ट्रांसफॉर्मेशन करना है, तो हमें पूछना जरूरी है। आप इतनी दूर से हम पर भरोसा करके आए हो, तो मेरा कर्तव्य है कि आप तक जो भी वस्तु पहुंचाऊं — चटाई हो, कंबल हो, भोजन हो — वो शुद्ध हो। यहां की व्यवस्था ईमानदारी से हो और आप तक पहुंचे तो उससे आपका आत्मिक कल्याण बहुत तेजी से होगा, ऊर्जा मिलेगी, बल मिलेगा। जैसे घर में गार्डियन का काम है बच्चों की परवरिश, वैसे ही ये काम मेरा है। इसलिए मैं सामने वाले को बोल देता हूं — बेईमानी का पैसा हो तो ना दे, ईमानदारी का हो तो दे। उसने कह दिया ईमानदारी का है, तो बात खत्म — वो जाने, उसका कर्म जाने; मेरे तक आते-आते वो ईमानदारी का पैसा हो गया। सबको अपने कर्मों का हिसाब मिलेगा, इसलिए पूछना बहुत जरूरी है।

प्रश्न: गुरु जी, मैं हॉस्पिटल में काम करता हूं। अगर मुझे किसी मेडिसिन की जरूरत हो तो मैं हॉस्पिटल से ले सकता हूं क्या? क्या यह भी बेईमानी है? (P25-0163)

अपने सीनियर से पूछना चाहिए। सीनियर से बिना पूछे नहीं लेना चाहिए।

प्रश्न: गुरु जी, क्या मेकअप का आत्मज्ञान से डायरेक्ट कनेक्शन है? (P25-0164)

पूरी तरह। मेकअप उतरा मतलब आपका बनाया हुआ अस्तित्व गया — त्याग हो गया, खत्म। मेकअप मतलब सिर्फ चेहरे पर नहीं — बोलचाल, कपड़ा, भाषा, उठना-बैठना, चाल-चलन, झूठी बड़ाई, झूठी वाहवाही — आपकी जिंदगी में पूरा मेकअप है; दिखाना कुछ और चाह रहे हैं, हैं कुछ और। लोगों के लिए सज-संवर के जिंदगी नरक कर दी है — लोगों के लिए पहनना, टाइम भी जाता है, जिंदगी चली जाती है। घर आते ही आप सबसे पहले मेकअप उतारते हो, कपड़े बदलते हो — फिर आईने के सामने खड़े हो जाइए, वही आप हो, मस्त। मेकअप उतार दीजिए, मास्क उतार दीजिए।

प्रश्न: गुरु जी, कभी-कभी मैं खुद के लिए अच्छा दिखना चाहती हूं, कपड़ों से कॉन्फिडेंस भी आता है। और ऑफिस में किसी पोस्ट पर मीटिंग अटेंड करनी हो तो वैसा ड्रेस पहनना पड़ता है — तो क्या करें? (P25-0165)

आप वहां अपने पद का उपयोग कर रही हैं — जिस पद पे आप हैं उसके लिए वो कपड़े डालने पड़ रहे हैं, क्योंकि जब आपका आवरण मजबूत होगा तो लोग आपको समझेंगे; वो काम में चलेगा। काम नहीं है तो फिर नॉर्मल रहो। जिस पद पे है वो कपड़ा तो पहनना ही पड़ेगा, कपड़े का भी अपना प्रभाव है — बात यह है कि आप कपड़ा किस लिए पहनते हो, उसके पीछे मतलब क्या है। आवरण बड़े काम का है, लेकिन आवरण का सहारा आपने अपने मान को बढ़ाने के लिए, किसी को गिराने के लिए ले लिया — गड़बड़ ये हो गया। काम के लिए, ना कम ना ज्यादा — वो ठीक है। किसी को आकर्षित मत करो, अपना काम करो।

प्रश्न: गुरु जी, सुना है कि ज्यादातर लोगों का आत्मज्ञान का फल और शरीर छोड़ने का फल एक ही रहता है, बहुत कम लोग आत्मज्ञान के बाद शरीर को रख पाते हैं। तो जब मैं आत्मज्ञान की स्थिति में पहुंचूंगा, तो क्या उसके लिए कोई अलग विधान या क्रिया करनी पड़ेगी कि शरीर छूट ना जाए? (P25-0166)

ये भ्रम आपने पैदा किए हैं — अपनी पैदावार कम कर दो भैया। आप अभी किस स्थिति में हो? आप उस स्थिति में जाओगे तो पता चलेगा, ऐसे कैसे भ्रम दूर होगा? पहले अपने आप को राग-द्वेष से छुड़ाओ। आत्मज्ञान की स्थिति की बात सीधा मत करो — उस स्थिति तक पहुंचा कैसे जाए, उसके लिए काम करो।

प्रश्न: गुरु जी, दुकानदार जो सामान बेचकर कमाता है, वो पैसा बेईमानी का तो नहीं? (P25-0167)

अब देखना है कि वो कैसे कमा रहा है। जैसा है वैसा सामान बता रहा है, दे रहा है, तो ईमानदार है। पता चला सामान कुछ और दे रहा है, तो फिर वो बेईमान है।

प्रश्न: जहां आप सही होंगे, दुनिया आपको गलत साबित करने में लग जाती है। इसमें क्या करें? (P25-0168)

नहीं लगती भाई। कैसे साबित कर लेगी? कोई नहीं साबित कर सकता।

प्रश्न: गुरु जी, किसी ने जरूरत के भाव में आकर हमसे कुछ लिया और उसका गलत इस्तेमाल किया, तो क्या उससे हमारा कर्म खराब होगा? (P25-0169)

नहीं। अगर आपने पूछ के दिया है, तो वो उसका कर्म जाने।

प्रश्न: जरूरत से ज्यादा पाने की इच्छा को बहुत से उदाहरणों से बताने की कृपा कीजिए। (P25-0170)

जैसे हमारे पास जितनी जरूरत है, उससे ज्यादा सामान रखना। एक-दो कपड़े की जरूरत है; दो से चार, पता नहीं कितने कपड़े, कितने चप्पल, कितने जूते बेमतलब के रखे हो। जरूरत में जीना चाहिए। सब उसको ढोना पड़ता है — जितना सामान लाओगे, उसके लिए समय देना पड़ेगा।

प्रश्न: योग्यता से ज्यादा का मतलब क्या है? (P25-0171)

योग्यता से ज्यादा पाने की इच्छा का त्याग करें। जैसे मान लीजिए ₹100 आपकी जेब में है। दुकान पे गए, ₹100 का सामान अगर लोते तो राग-द्वेष कुछ नहीं होगा। और 200 का सामान चाहिए — दुकानदार ने दिया तो राग होगा, नहीं दिया तो द्वेष हो जाएगा। बस इतनी सी बात है। आजकल प्लास्टिक मनी है, क्रेडिट कार्ड है, तो उसमें भी पैसा तो होना चाहिए। तरीका बदल गया है, लेकिन पैसा चाहिए।

प्रश्न: क्या ज्यादा कपड़े रखने से पाप लग रहा है? क्या उसका कर्म भोगना पड़ेगा?

(P25-0172)

अगर ईमानदारी का है तो कोई कर्म नहीं भोगना, लेकिन समय तो बर्बाद होगा आपका — आप अपने आप में समय दे सकते। और बेईमानी का होगा तो भोगना पड़ेगा, क्योंकि आपने कितनों का कपड़ा छीना है। ईमानदारी का होगा तो कोई बात नहीं, आप हजारों रखो, लेकिन हजारों रखने में समय भी तो जाएगा — धोने में, उसको सुरक्षित रखने में। जब आपके 100 कपड़े रहे, तो आज कौन सा पहनूं, प्लानिंग करना पड़ेगा; आप सीधा जाके निकाल के नहीं पहन सकते। और जिसके दो कपड़े हैं, वो सीधा निकाल के पहन लेगा। ज्यादा है तो जरूरतमंद को दो — गरीबों को नहीं, जरूरतमंद को; जरूरी नहीं हर गरीब जरूरतमंद हो।

प्रश्न: बाबा, किसी ने कहा है कि साक्षी भाव को लाओ। आध्यात्मिकता में यह साक्षी भाव क्या होता है? उदाहरण से समझाएंगे? (P25-0173)

साक्षी भाव मतलब आप करते हुए अपने आप को जांचते रहो — साक्षी भाव से कि मैं कहीं गलत नहीं कर रहा हूँ।

प्रश्न: ईश्वर का सतत स्मरण कैसे करें? (P25-0174)

24 घंटे जरूरतमंद की सेवा करिए, ईमानदारी के साथ।

प्रश्न: महाराज, आश्रम का अर्थ क्या होता है और आश्रम का उद्देश्य क्या है?

(P25-0175)

जैसे विद्यालय है — शिक्षा का केंद्र है, श्मशान में शरीर जलाया जाता है, मंदिर शांति का केंद्र है — वैसे आश्रम ज्ञान का केंद्र है। जिस विद्यालय में शिक्षा नहीं हो रही, वह विद्यालय किसी काम का नहीं है। जिस आश्रम में ज्ञान नहीं दिया जा रहा है, समाज वालों के लिए सत्मार्ग नहीं बताया जा रहा है, वो आश्रम किसी काम का नहीं है। तो ज्यादातर हमने घूम के यही देखा कि 80% से ज्यादा आश्रम होटल बन गए, होटल-रिसॉर्ट। जाओ, भंडारा खाओ, घूमो, चले आओ। और घर पे आके बोलो कि क्या बात — हलवा बड़ा बढ़िया था, परांठे तो बड़े घी के थे। मतलब आश्रम में घी के परांठे खाए गए।

प्रश्न: गुरुदेव, लोग आत्मज्ञान के साधक होकर भी दुनियादारी की ज्यादा बातें करते हैं और आनंद ढूँढते रहते हैं। ऐसा क्यों होता है? क्या हम जन्म-जन्मांतरों के संस्कारों में लिपटे हुए हैं? (P25-0176)

नहीं, आप छोड़ सकते हैं जब चाहें तो।

प्रश्न: बाबा, आप वैराग्य को मना करते हैं, लेकिन मैं ऐसी जगह रहता हूँ जहाँ हर रोज झगड़ा-फसाद होता है और मुझे शांति नहीं मिल पाती। मुझे मेरी शांति बहुत प्यारी है। इसमें मैं क्या करूँ? (P25-0177)

तो शांति वाली जगह चले जाओ। शांति वाला काम करो।

प्रश्न: बाबा, कोई चमत्कार है तो बताओ। (P25-0178)

आपका होना ही चमत्कार है। हर रोज, हर सुबह, हर क्षण कितने लोग निकल जाते हैं — तुम अभी भी हो। तुम्हें जिंदगी ने मौका दिया है, आत्मिक कल्याण कर लो। ये चमत्कार नहीं लगता आपको? यहाँ जितने लोग बैठे हैं, आपके साथ के कितने लोग निकल गए और आप अभी भी मौजूद हैं। ये चमत्कार नहीं है? चमत्कार — जिंदगी ने आपको अभी भी मौका दिया है।

प्रश्न: अगर बढ़ा-चढ़ाकर काम दिखाकर प्रमोशन हो जाए, जो कि बेईमानी हुई, मगर प्रमोशन के बाद ईमानदारी से काम किया जाए, तो क्या वो ठीक है? (P25-0179)

ईमानदारी से ही शुरुआत करो ना। बेईमानी क्यों कर रहे हो? कहीं झूठ बोलना पड़ रहा है, आपकी योग्यता ज्यादा दिखानी पड़ रही है, बायोडाटा गलत बना रहे हो, मार्केट का एक्सपीरियंस गलत दे रहे हो — तब तो ये कमाई पूरी बेईमानी हो जाएगी, सारी जिंदगी के लिए। आप गलत मत दीजिए, जैसे आप हैं वही बता के उस पद पे जाइए। अगर आपने शुरुआत ही गलत किया है, तो आप फिर कितनी भी ईमानदारी करें, आपकी ईमानदारी का क्या मतलब? बेसिक गलत — आपने पद पाने में ही छल किया।

**प्रश्न: गुरु जी, घर में मकड़ी का जाला लगता है, उसको तोड़ने पे भी पाप लगेगा?
और मच्छर काटे तो मार दिया — उसका क्या? (P25-0180)**

नहीं। मच्छर काट रहा था, हाथ ऑटोमेटिक चला — कोई बात नहीं, आत्मरक्षा में पाप नहीं है। अब देखना है — आत्मरक्षा में मारे कि शौक से मारे। घर में जो स्प्रे मारते हैं मच्छर मारने के — जितना हो सके बचाओ।

प्रश्न: क्या संत संतोष में जीते हैं या जरूरत में? (P25-0181)

जरूरत में।

**प्रश्न: कुछ दिनों से मेरे अंदर आत्मज्ञान प्राप्त करने का एक भाव उत्पन्न हुआ है।
सवाल ये है कि यह भाव मेरा है या परमात्मा की कृपा है? (P25-0182)**

आपका ही है। परमात्मा से क्या मतलब?

**प्रश्न: गुरुदेव, आप जीवित गुरु की बात कहते हैं, पर मेरे दीक्षा गुरु तो मेरी 8-10 वर्ष
की उम्र में ही शरीर रूपी चोला छोड़कर चले गए। तो मुझे अब आध्यात्मिक
मार्गदर्शन किससे प्राप्त करना चाहिए? (P25-0183)**

जहां से ज्ञान मिल रहा है, ले लो।

**प्रश्न: कहने को जिंदगी बहुत छोटी, पर जियो तो बहुत लंबी। और जब जीते-जीते
थक जाएं तो क्या करें? (P25-0184)**

बस आ जाओ अपनी कुटिया में। अब थक ही गए हो तो आओ, यहां रहो।

**प्रश्न: रूहानी ताकत, जो उर्दू में कहते हैं, वो आध्यात्मिकता से किस तरह जुड़ी है?
(P25-0185)**

रूहानी — आत्मा की ताकत। आत्मज्ञान को बोला जा रहा है। तो आत्मज्ञान मतलब वही — अपने आप में स्थिर हो जाना, पवित्र हो जाना। अपने आप को पवित्र कर लेना — आत्मज्ञान। बस, बात खत्म।

प्रश्न: मैं आपका उपदेश आगे लोगों में देने का प्रयास करता हूँ। जैसा आप बोलते हैं वैसा बताने में समर्थ हूँ। तो क्या मैं कुछ गलत तो नहीं कर रहा हूँ? (P25-0186)

उन्हें बता दीजिए कि आप किसका बोल रहे हैं, और उसको आचरण में उतार कर बोलिए। या तो सीधा वीडियो दे दीजिए।

प्रश्न: जैसे हम खेती कर रहे हैं, उसमें पेस्टिसाइड तो खूब यूज़ हो रहे हैं। तो इसमें ईमानदारी-बेईमानी का मामला क्या है? (P25-0187)

अब देखिए, आपके ऊपर क्या स्थिति-परिस्थिति है। अगर बिना स्प्रे के हो सकता था और आपने ज्यादा के चक्कर में सबका खा लिया, तो आपको उसका भुगतान करना पड़ेगा। इस पर कुछ बोला नहीं जा सकता — आपके ऊपर है। अगर आप जरूरत में कर रहे हो तो कोई बात नहीं है। फसल तो बचानी पड़ेगी — बचाओ।

प्रश्न: बहुत दिन से जरूरत में जी रहे हैं। उसके बाद अब साधना कैसे करें? (P25-0188)

पेड़ के नीचे बैठ जाओ, तभी उठो जब उपलब्धि हो जाए। ये रास्ता बहुत आसान है, आप लोग पकड़ो इसे। ये पेड़ इंतजार कर रहा है उस साधक का — कोई तो आके बैठे, तभी उठे जब उपलब्धि हो जाए। कई लोग तैयार होते हैं लेकिन भाग जाते हैं।

प्रश्न: गुरु जी, उपवास का आध्यात्मिक कनेक्शन क्या है? (P25-0189)

उपवास में आत्मिक चिंतन बहुत तेजी से होता है। इंद्रियां कमजोर हो जाती हैं, आत्मिक चिंतन बढ़ जाता है — कहां-कहां फंसे हो, वो आसानी से दिखने लगता है। और जब आप इंद्रियों को बल दिए रहते हो, ताकत रहती है, तो उसमें भोग का चिंतन ज्यादा होता है। तो अल्पाहार भोजन बोला गया है। अल्पाहार भोजन लीजिए, आत्म-चिंतन बहुत तेजी से बढ़ जाएगा।

प्रश्न: आत्मा का स्वभाव अकर्ता, साक्षी, दृष्टा है — तो फिर चिंतन की क्या आवश्यकता है? (P25-0190)

चिंतन की इसलिए आवश्यकता है कि मैं जहां हूँ — क्या जहां मैं हूँ, वहां दुखी हूँ, निराश हूँ, उदास हूँ? तो मुझे वहां से कैसे मैं निकल जाऊं, उसके लिए चिंतन करना है।

प्रश्न: जब मन विरक्त हो गया और मैं सबसे हट गया हूं, तो प्रश्न यह खड़ा होता है कि मेरी उपलब्धि क्यों नहीं? मैं उस परमानंद में क्यों नहीं, आत्म-साक्षात्कार क्यों नहीं?

(P25-0191)

तो इस पे आत्मिक चिंतन करो। बस अपने को यह देखना है कि आखिर जब सब कुछ हो ही चुका है — राग, द्वेष, मोह, आसक्ति, इच्छा, अपेक्षा, मेरा, कर्ता के भाव से मैं छूट चुका हूं — तो फिर मैं उस परम स्थिति को उपलब्ध क्यों नहीं हूं? इसका मतलब कहीं ना कहीं कुछ है, मैं देख नहीं पा रहा हूं, मैं समझ नहीं पा रहा हूं। कुछ तो है, नहीं तो मैं उस स्थिति में होता, उस परम आनंद में होता। अगर अप-डाउन चल रहा है, इसका मतलब अप-डाउन में मैं कहीं हूं — कहीं तो राग-द्वेष है, कुछ तो मान की इच्छा है, कुछ तो बढ़ाई की इच्छा है। कोई ना कोई मेरी सूक्ष्म इच्छा बाकी है। अगर उपलब्धि नहीं है तो इसका मतलब कोई ना कोई कामना है। और बहुत आसानी से ढूंढ सकते हो, अगर आप स्वीकार करो। कभी-कभी हम अपनी कमियों को स्वीकार नहीं कर पाते — कमी दिखती भी है, लेकिन उस कमी को अपना टैलेंट, अपनी योग्यता समझते हैं। तो आप कमी को ढूंढो कि कौन सी ऐसी कमी है जो मुझे अपने स्व में स्थिर नहीं होने दे रही, सत्य तक पहुंचने नहीं दे रही, परम आनंद को उपलब्ध नहीं होने दे रही। मैं कहां उलझा हूं? कहां फंसा हूं? कुछ तो है, कोई तो बात है। इसे खोजिए।

प्रश्न: कोई भी अनुभव और आत्मानुभूति — क्या दोनों से परे उठना है? (P25-0192)

दोनों से परे उठना है, अपने आप में। तभी स्थिर हो पाओगे, जब सारे अनुभव से परे उठ जाओगे, अनुभूति की भी इच्छा नहीं रहेगी, जब कोई भी कामना नहीं रहेगी — तब जाके उस परम सत्य में स्थिर हो पाओगे। अगर कोई भी कामना है, चाहे अनुभव का हो, चाहे आत्मानुभूति का हो, तो फिर आप ऐसे भटकते रहोगे।

प्रश्न: किसी आश्रम में साधना के लिए बड़ा योगदान (शुल्क) देना पड़ता है और हम उतना नहीं दे पाएँ, तो क्या करें? (P25-0193)

अगर नहीं दे पाओगे — देखो, जैसे यहां पे मैंने कहा निशुल्क, तो यहां पे रहो, कोई दबाव नहीं। लेकिन अगर वहां व्यक्ति होटल को दे रहा है और लोगों को खर्च दे रहा है, तो वह कहां से भरेगा? उतना है तो ही जाओ, नहीं तो मत जाओ, क्योंकि उस पे भी तो दबाव होगा। अगर वो समाज की व्यवस्था लेके आपको साधना करवा रहा है और उसका किराया दे रहा है — चाहे वस्तु है, सामान है, जगह है — तो उस व्यक्ति को दबाव मत दो। आप मदद नहीं कर सकते, तो कम से कम जितनी तुम्हारी फीस है उतना तो उसे दो। और अगर कोई निशुल्क कर रहा है, तो हमें अपनी क्षमता अनुसार सहयोग देना चाहिए कि भाई यह निशुल्क कर रहा है, यह इसकी महानता है। यह कर्मभूमि है — इस पृथ्वी पर निशुल्क कुछ है? कोई कीमत चुकानी पड़ती है। अगर कोई निशुल्क दे रहा है तो उसने कहीं कीमत चुकाई है, मेहनत किया है। तो मैं जिस लायक हूं, उस लायक सहयोग दूं। अगर मैं और लोगों के लिए नहीं दे सकता तो कम से कम अपना तो दूं, और अपना नहीं दे सकता तो शरीर से मेहनत कर दूं। धन की भरपाई कोई और कर देगा, लेकिन तन का भी सेवा होता है, तो मैं वो कर दूं। किसी न किसी तरीके से मैं भरपाई करूं। अगर मुझमें लेने की ताकत है, इसका मतलब देने की ताकत है।

प्रश्न: लेनदेन में राग-द्वेष से कैसे बचें? (P25-0194)

कोई भी लेनदेन कर रहे हो, तो उसमें ईमानदार रहो — बस बात खत्म। जहां भी आपको कर्म करने का मौका मिला, आप लेनदेन कर रहे हो — चाहे शब्दों का लेनदेन हो, चाहे पैसों का लेनदेन हो, चाहे व्यवस्थाओं का लेनदेन हो — बस उसमें ईमानदार रहो।

प्रश्न: गुरु जी, मैं आंगनबाड़ी वर्कर हूं। जितने बच्चों की हाजिरी लगाते हैं, वे सब आते नहीं। अगर हाजिरी नहीं लगाऊंगी तो सेंटर बंद हो जाएगा, जिससे मेरा घर चलता है। मैं क्या करूं? (P25-0195)

सेंटर बंद हो जाए, ठीक है। कम से कम ईमानदार तो रहोगे। बेईमानी से अगर अपना घर चला रहे हो, तो कोई मतलब है क्या?

प्रश्न: योगी जी, कुछ नुकसान से बचने या जान छुड़ाने के लिए झूठ बोलना पड़ता है, तो इससे कैसे बचें? थोड़ा मार्गदर्शन करें। (P25-0196)

अब किस स्थिति में आप झूठ बोल रहे हो, जान छुड़ा रहे हो? क्या सामने वाले ने आप पर भरोसा किया है? तो उससे झूठ ना बोलो। स्थिति-परिस्थिति देखना पड़ेगा।

प्रश्न: अहम (मैं) कैसे खत्म होगा, गुरु जी? (P25-0197)

जब आप किसी को भी नीचा दिखाने का भाव हटाएंगे, मान की इच्छा हटाएंगे, बढ़ाई की इच्छा हटाएंगे, योग्यता से ज्यादा पाने की इच्छा हटाएंगे — तभी अहम भाव खत्म होगा। अहम भाव को खत्म करना सबसे जरूरी है। और अहम भाव तभी आता है जब मान की इच्छा होती है। अहम भाव को अगर आपने नहीं गिराया, तो फिर वह आपका विनाश कर देता है, आपका पतन कर देता है, और आपको वहां ले जाकर खड़ा करता है कि आप अपने आप को दुखी, निराश, उदास पाते हो।

प्रश्न: गुरुदेव, एक साधक में हठ योग की स्थिति कब उत्पन्न होती है? (P25-0198)

हठ योग की स्थिति हमारे अंदर बचपन से है। देखो, जब कोई मेरे तरीके से नहीं करता है, तो अगर वहां प्रेम है, लगाव है, कुछ बात है, तभी मैं उसे जिद करके करवाने का प्रयास करता हूं। तो हठ योग मेरे अंदर पहले से है। अब जैसे-जैसे आप साधना करेंगे, जैसे-जैसे आगे बढ़ेंगे, हठ योग में अपने आप आ जाएंगे। हठ योग लाना नहीं पड़ता है। देश, काल, स्थिति, परिस्थिति में हठ योग अपने आप आता है। हठ योग करना नहीं पड़ता है, आ जाता है।

प्रश्न: गुरुदेव, जीवन में कहीं पर भी बंधन तो है नहीं, एकांत में भी रहती हूं — लेकिन सूक्ष्म बंधन को कैसे जानें? मार्गदर्शन कीजिए। (P25-0199)

बंधन तो है। अगर बंधन नहीं होता तो आप उस स्थिति में होते। आप ये समझने का प्रयास करिए — अगर आपकी स्थिति भी नहीं है, और आप स्वीकार कर लिए कि कोई बंधन भी नहीं है, राग-द्वेष, मोह, आसक्ति, इच्छा, अपेक्षा, मेरा, कर्ता का भाव भी नहीं है, कहीं मान की इच्छा भी नहीं है — तो फिर एक तो स्थिति नहीं है। मशीन बनी नहीं, तो कहीं ना कहीं बिगड़ी है, नहीं तो बन जाती। अब उसका परिणाम भी नहीं आ रहा है, और आप कह रहे हो कि कहीं बिगड़ी भी नहीं है — दोनों बातें नहीं हो सकती। तो आप उस परम स्थिति पर नहीं हो, तो इसका मतलब कहीं ना कहीं उलझे हो। उस उलझन को दूर करो। बोलने से बात नहीं होगी। ऐसे समय आपका चला जाएगा, धीरे-धीरे समय बर्बाद हो जाएगा।

प्रश्न: गुरु जी, मैं अपनी जरूरत पे दुकान खोलकर कार्य करता हूं। कार्य करते समय फ्री टाइम में पेपर पढ़ना, कमेंट्स करना या मोबाइल देखना बेईमानी है? (P25-0200)

नहीं। अगर कोई काम नहीं है तो आप कर सकते हो, लेकिन जहां भी काम कर रहे हो, काम नहीं छूटना चाहिए, काम में कोई तकलीफ नहीं आना चाहिए।